Postal Reg. No.GDP -45/2017-2019

بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ نَحۡمَدُہٗ وَنُصَلِّیۡ عَلٰی رَسُوۡلِہِ الۡکَرِیۡمِ وَعَلٰی عَبۡدِہِ الۡمَسِیۡحِ الۡمَوۡعُوۡدِ

وَلَقَدۡ نَصَرَکُمُ اللّٰہُ بِبَدۡرٍ وَّاَنۡتُمۡ اَذِلَّۃٌ

वर्ष 2

साप्ताहिक क़ादियान

बदर

The Weekly BADAR Qadian HINDI

अंक 39

मूल्य 300 रुपए वार्षिक

संपादक शेख़ मुजाहिद अहमद

28 सितम्बर 2017 ई. 7 मुहर्रम 1439 हिजरी कमरी

अख़बार-ए-अहमदिया

रूहानी ख़लीफ़ा इमाम जमाअत अहमदिया हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद साहिब ख़लीफ़तुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज सकुशल हैं। अलहम्दोलिल्लाह। अल्लाह तआला हुज़ूर को सेहत तथा सलामती से रखे तथा प्रत्येक क्षण अपना फ़जल नाज़िल करे। आमीन

मैं सच कहता हूं और मैं ख़ुदा की कसम खाता हूँ कि मैं और मेरी जमाअत मुसलमान हैं और वह आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम और कुरआन पर इसी तरह विश्वास लाता है जिस तरह एक सच्चे मुसलमान को लाना चाहिए।

उपदेश सय्यदना हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम

मैं बहुत खेद और दु:ख से यह बात कहता हूं कि क़ौम ने मेरे विरोध में केवल जल्दबाजी की, बल्कि बहुद बेदरदी भी की। केवल एक मस्ला मसीह की मृत्यु का मतभेद था जिसे में क़ुरआन और आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की सुन्नत, सहाबा की सहमति और तर्कसंगत तर्क और पिछली पुस्तकों से साबित करता था और करता हूँ और हनफ़ी धर्म के अनुसार कुर्आन, हदीस, कयास, शरियत के तर्क मेरे साथ हैं लेकिन उन लोगों ने इससे पहले कि वह पूरे तौर पर मुझ से पूछ लेते और मेरे तर्क सुन लेते इस समस्या के विरोध में यहां तक अतश्यिोक्ति कि के मुझे काफिर ठहराया गया और उसके साथ और भी जो चाहा कहा और मेरे ज़िम्मे लगाया। धैर्य और सबर की मांग थी कि मुझ से पहले पूछ लेते। अगर मैं अल्लाह तआला और अल्लाह के रसूल की बातों की सीमा से बाहर निकलता तो नि:सन्देह उन को अधिकार था कि वे मुझे जो चाहे कहते दज्जाल,कज़्ज़ाब आदि लेकिन जब कि मैं आरम्भ से यह कहता आया हूं कि मुझे कुरआन और आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि के अनुकरण से इधर उधर होना बेईमानी समझता हूं। मेरा विश्वास है कि जो भी इसे थोड़ा भी छोड़ेगा वह जहन्नमी है। फिर इस विश्वास को केवल भाषणों में वर्णित नहीं किया गया है, बल्कि साठ के लगभग अपनी पुस्तकों में बहुत स्पष्टता से वर्णन किया और दिन रात में मुझे यही एक ही विचार रहता है फिर अगर यह विरोधी ख़ुदा से भयभीत होते तो क्या यह उन का कर्तव्य नहीं था कि मुझ से पूछते कि अमुक बात इस्लाम से बाहर की हैं, इसका कारण क्या है या इस का तुम क्या जवाब देते हो। परन्तु नहीं इस की थोड़ी भी चिन्ता नहीं की सुना और काफिर करार दे दिया। मैं बहुत आश्चर्य से उन की हरकत को देखता हूं। क्योंकि पहले तो मसीह के जीवित रहने का मसला कोई ऐसा मसला नहीं है जो इस्लाम में प्रवेश करने की एक शर्त है। यहां भी हिंदुओं या ईसाई मुस्लिम होते हैं लेकिन मुझे बताओ, क्या तुम उस से यह स्वीकार भी कराते हो? सिवाए इस के कि

اٰمَنۡتُ بِاللّٰہِ وَمَلَآئِکَتِہٖ وَ کُتُبِہٖ وَرُسُلِہٖ وَالۡقَدۡرِ خَیۡرِہٖ وَشَرِّہٖ مِنَ اللّٰہِ تَعَالٰی وَالۡبَعۡثَ بَعۡدَ الۡمَوۡتِ

जबकि यह मसला इस्लाम का अंग नहीं तो मुझ पर मसीह की मृत्यु की घोषणा से इस कदर हिंसा क्यों की गई कि यह काफ़िर है दज्जाल है इन्हें मुसलमानों के कब्रिस्तान में दफन नहीं किया जाए। इन के सामान लूटने की अनुमति है और इन की औरतों को बिना निकाह के घर में रख लेना उचित है। इन्हें कत्ल कर देना सवाब का काम है, इत्यादि। एक तो वह ज़माना था कि यही मौलवी शोर मचाते थे कि अगर 99 कारण कुफ्र के हों और एक कारण इस्लाम का हो तब भी कुफ्र का फतवा न देना चाहिए उसे मुसलमान ही कहो। लेकिन अब क्या हुआ? क्या मैं और मेरी जमाअत

اَشۡھَدُ اَنۡ لَّآ اِلٰہَ اِلَّا اللّٰہُ وَحۡدَہٗ لَا شَرِیۡکَ لَہٗ وَاَشۡھَدُ اَنَّ مُحَمَّدًا عَبۡدُہٗ وَ رَسُوۡلُہٗ

नहीं पढ़ते? क्या मैं नमाज़ें नहीं पढ़ता? क्या हम रमज़ान के रोज़े नहीं रखते? और क्या हम उन समस्त सभी मान्यताओं को मानने वाले नहीं जो आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने इस्लाम के संदर्भ में उल्लेख किए हैं?

मैं सच कहता हूं और मैं ख़ुदा की कसम खाता हूँ कि मैं और मेरी जमाअत मुसलमान हैं और वह आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम और कुरआन पर इसी तरह विश्वास लाते है जिस तरह एक सच्चे मुसलमान को लाना चाहिए। मैं एक क्षण भी इस्लाम से बाहर कदम रखना मौत का कारण विश्वास करता हूँ और मेरा यही धर्म है कि जिस कदर बरकतें कोई व्यक्ति प्राप्त कर सकता है और जहां तक संभव हो, वह अल्लाह की निकटता पा सकता है वह केवल आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की सच्ची आज्ञाकारिता और परिपूर्ण प्रेम से पा सकता है, अन्यथा नहीं। आपके अलावा अब कोई मार्ग नेकी की नहीं है। हां, यह भी सच है कि मैं ईमान हरगिज़ नहीं रखता कि है कि मसीह अलैहिस्सलाम इस शरीर के साथ जीवित स्वर्ग में गए हों और अभी तक ज़िंदा हों इसलिए इस मसला को स्वीकार करके आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का बहुत अपमान और बेइज़्ज़ती होती है। मैं एक क्षण के लिए यह सहन नहीं कर सकता। सबको पता है कि आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की 63 साल की उम्र में मृत्यु हुई और मदीना तैयबा में आपका मकबरा मौजूद है। हर साल लाखों तीर्थयात्री भी जाते हैं अब यदि मसीह अलैहिस्सलाम के बारे में मौत को सुनिश्चित करना या मौत को उनकी तरफ संबंधित करना बेअदबी है तो मैं कहता हूँ कि आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के बारे में यह गुस्ताखी और बेअदबी क्यों विश्वास कर ली जाती है? लेकिन आप

पृष्ठ 12 पर शेष

123 वां
जलसा सालाना क़ादियान
दिनांक 29, 30, 31 दिसम्बर 2017 ई. को आयोजित होगा

सय्यदना हज़रत अमीरुल मोमिनीन अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने 123 वें जलसा सालाना क़ादियान के लिए दिनांक 29, 30 और 31 दिसम्बर 2017 ई.(जुम्अ:, हफता व इतवार) की स्वीकृति दी है। जमाअत के लोग अभी से इस शुभ जलसा सालाना में उपस्थित होने की नीय्यत करके दुआओं के साथ तैयारी आरम्भ कर दें। अल्लाह तआला हम सब को इस ख़ुदाई जलसे से लाभ उठाने की क्षमता प्रदान करे। इस जलसा सालाना की सफलता व बा-बरकत होने के लिए इसी तरह यह जलसा लोगों के लिए मार्ग दर्शन हो इसके लिए विशेष दुआएँ जारी रखें। धन्यवाद (नाज़िर इस्लाह व इरशाद मरकज़िया, क़ादियान)

जमील अहमद नासिर प्रिंटर एवं पब्लिशर ने फ़ज़्ल-ए-उमर प्रिंटिंग प्रेस क़ादियान में छपवा कर दफ़्तर अख़बार बदर से प्रकाशित किया। प्रौपराइटर - निगरान बदर बोर्ड क़ादियान

अल्लाह तआला की राह में खर्च करना

(पवित्र उपदेश और ईमान वर्धक घटनाएं) (भाग-4)

वर्तमान युग के उदाहरण:

और चलो अब देखते हैं कि दूरे आख़रीन में जो हज़रत रसूले पाक सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का पूर्ण ग़ुलाम और सच्चे आशक का बरकतों वाला दौर है जिस में अल्लाह तआला ने हमें पैदा किया है और है और यह सौभाग्य प्रदान किया है कि हम ने यह ज़माना जिस की राह तकते तकते लाखों करोड़ों इंसान इस दुनिया से गुज़र गए । हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के सहाबा ने प्रथम शताब्दी के सहाबा का इस पर प्रकार अनुसरण किया कि उन के आक़ा ने उन्हें जीते जी ही यह ख़ुश खबरी सुना दी कि

मुबारक वह जो अब ईमान लाया
सहाबा से मिला जब मुझ को पाया

इन साहाबा और ताबेईन के उदाहरण कोई दूर की बातें नहीं। इनमें से कुछ खुश नसीबों को देखने का सौभाग्य हम में से कुछ ने पाया और कई ऐसे ताबेईन हैं कि जो आज इस दौर में हमारे बीच मौजूद हैं और अपने पूर्ववर्ती सहाबा के रंग में रंगीन हैं। आइए देखें कि इस्लाम के इन फिदाइयों ने वित्तीय क्षेत्रों में कैसे तरीके रौशन मिनार निर्माण किए।

अल्लाह का रास्ते में खर्च करना एक बात है, लेकिन ऐसा करते हुए अत्याधिक फिदा होना कुरबानी करना, और आगे बढ़ने की भावना भी साथ हो तो ऐसी कुर्बानियों को चार चांद लगा देती है। यह बिल्कुल प्रारंभ की बात है हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम को विज्ञापन को प्रकाशित करने के लिए साठ रुपए की ज़रूरत थी। आपने हजरत मुंशी ज़फर अहमद साहिब कपूरथलवी से फरमाया कि ज़रूरत शीघ्र है। क्या सम्भव है कि आपकी जमाअत इस आवश्यकता को पूरा करे? हज़रत मुन्शी साहिब ने हां कहा और हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की बात सुन कर सीधे घर गए। अपनी पत्नी की सहमति के साथ गहने बेचकर तत्काल आवश्यक राशि हुज़ूर की सेवा में प्रस्तुत कर दी। कुछ दिन बाद हज़रत मुंशी अरोड़ा ख़ान साहिब मिलने आए और हुज़ूर ने कपूरथला की जमाअत का धन्यवाद किया कि आप लोगों ने बहुत समय पर मदद की। इस पर यह रहस्य खुला कि मुंशी जफर अहमद साहब ने तो जमाअत के किसी दोस्त से इसका जिक्र तक नहीं किया। कितना कुर्बानी और कितना बेनफ्सी है इस घटना में!

रिवायत में आता है कि मुन्शी अरोड़ा खान साहिब को वित्तीय सेवा के इस दुर्लभ अवसर से वंचित रहने का इतना गंभीर दु:ख था कि आप लंबे समय तक हज़रत मुंशी जफर अहमद साहिब से नाराज़ रहे। क्या शान है इस नाराज़गी की? एकमात्र कारण यह था कि सारा सवाब आपने ही ले लिया और हमने इस सवाब में भागीदारी नहीं बनाया!(असहाबे अहमद भाग 6 पेज 72)

अबू बकर और हज़रत उमर की घटना से, जो आपने अभी पढ़ी है,दूसरे ज़माना की मियां शादी खान की याद आ जाती है। सियालकोट के लकड़ी बेचने वाले बहुत अल्लाह तआला पर भरोसा करने वाले थे। ग़रीब थे लेकिन दिल के बादशाह। इस कुरबानी करने वाले इंसान का नमूना यह था कि उन्होंने एक मौके पर अपने घर का सारा सामान बेचकर डेढ़ सौ रुपया के बाद और दो सौ रुपए हुज़ूर की सेवा में पेश कर दिए। उस युग की दृष्टि में यह एक बहुत बड़ी महान कुरबानी थी। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने एक मज्लिस में इस पर ख़ुशी को प्रकट करते हुए फरमाया मियां शादी ख़ान ने तो अपना सब कुछ प्रस्तुत कर दिया और

"वास्तव में, वह काम किया जो अबू बक्र रज़ि अल्लाह ने किया था।"

(उद्धरण मजमूआ इश्तिहारात जिल्द 3 पृष्ट 315)

मियां शादी ख़ान ने सुना तो सीदा गर गए। चारों तरफ नज़र दौड़ाई। सारा घर ख़ाली हो चुका था, केवल कुछ चारपाइयां बाकी थीं। तुरंत उन सभी को बेच दिया और सारी रकम ला कर हुज़ूर के कदमों में डाल दी और हुज़ूर के मुहं से निकली हुई बात को अक्षर अक्षर से पूरा किया।

और फिर देखें कि अल्लाह तआला ने इस फिदाई सेवक को कैसे सम्मानित करता है। उनकी मृत्यु हुई तो उनके अंतिम विश्राम स्थल बहिश्ती मकबरा में जगह बनी जो हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के मज़ार मुबारक से कुछ गज़ की दूरी पर थी और बाद में पवित्र चारदीवारी के अंदर आ गई।

अल्लाह तआला की राह में खर्च करने की तौफीक किसी इंसान का उसी समय केवल किसी इन्सान को मिल सकती है जब उसे अल्लाह तआला पर भरोसा की नेअमत प्राप्त हो। इस संबंध में, हज़रत सूफी अहमद जान साहिब, सुधियाना की एक सुंदर घटना याद रखने के योग्य है। आप के पुत्र हज़रत साहिबज़ादा ने पीर इफ्तिखार अहमद यह वर्णन करते हैं कि:

"हमारे घर में खर्च न था। मेरे पिता जी ने मेरी माता जी से पूछा कि अटा है? कहा नहीं माल है उत्तर न में मिला क्या ईंधन है? वही जवाब था। जेब में हाथ डाला। बस दो रुपए थे फरमाने लगे इस में इतनी चीज़े पूरी नही हो सकतीं, अच्छा, मैं इन दो रुपयों के साथ व्यापार करता हूं। वे दो रुपए किसी ग़रीब को दे कर ख़ुद नमाज़ पढ़ने चले गए। रास्ते में अल्लाह तआला ने दस रुपए भेज दिए। वापस आकर फरमाया: 'देखो, मैं अब व्यवसाय कर आया हूँ।' अब सब चीज़ें मंगवा लो। अल्लाह के रास्ते में माल देने से घटता नहीं यह बढ़ता है।

(इनामाते खुदावन्दे करीम लेखक हजरत साहिबज़ादा पीर इफ्तिखार अहमद साहिब, पृष्ठ 221-2222)

धर्म के रास्ते में वित्तीय बलिदान का एक बड़ा और बढ़िया उदाहरण है, हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के सहाबी हज़रत चौधरी मुहम्मद ज़फरुल्लाह खान का है लंदन के मिशन में सन साठ के दशक में यह प्रस्ताव चल रहा था कि जमाअत अहमदिया ब्रिटेन के केंद्र में मौजूद दो इमारतों को (जो काफी पुरानी हो चुकी थीं) गिराकर एक बड़ा परिसर बनाया जाए जिसमें एक बड़ा हॉल, कार्यालय, दो बड़े रिहायशी मकान और एक छोटा आवासीय फ्लैट हो। इस निर्माण योजना के लिए जमाअत को उस समय कोई दस लाख पाउंड पैसा की रकम चाहिए थी जो जमाअत के पास नहीं थी। जमाअत की आवश्यकताओं के लिए बैंक से ब्याज का रकम लेना भी जमाअत की तरीका नहीं था ।

बहुत सोच विचार और प्रयास के बाद भी कोई रास्ता न बन सका, जब कोई मामला न बना तो हज़रत चौधरी साहिब से निवेदन किया गया कि क्या आप यह रकम दे सकते हैं जो आपको बाद में किस्तों में वापस कर दी जाएगी। आपने इस पर संतोष व्यक्त किया और कुरान की शिक्षा के अनुसार, एक अनुबंध प्रस्तावित किया गया था कि हजरत चौधरी जमाअत को दस लाख रुपए देंगे और जमाअत एक निश्चित समय के भीतर इस की वापसी की ज़िम्मादार होगी।एक शाम को प्रस्तावित अनुबंध चौधरी साहिब को दिया गया उन्होंने कहा, "मैं ध्यान से पढ़ कर कल हस्ताक्षर कर के दूंगा।"

अगली सुबह, चौधरी साहिब ने कहा कि मैंने बारे में सोचा और ईमानदारी से सोचा, फिर मेरे नफ्स ने मुझे बताया कि ज़फरउल्लाह खान! आज तुम जो कुछ हो अहमदियत के कारण हो? तुम ने जो कुछ पाया वह सारा का सार इसी जमाअत का फैज़ान है क्या तुम इसी मुहिसन जमाअत को एक रकम कर्ज़ा के रूप में दाने चाहते हो? मेरे नफ्स ने मुझे बहुत अधिक बुरा भला ठहराया, और मैं अपने इरादे के बारे में बहुत शर्मिंदा था, और बहुत इस्तिग़फार करता रहा। इस समय मैंने फैसला किया कि आवश्यक धनराशि एक ऋण के रूप में नहीं होगी, लेकिन एक विनम्र दान के रूप में जमाअत की सेवा में होगी। आपने अनुबंध के लेखन को फाड़ दिया और उसी समय में एक लाख पाऊंड का चेक जमाअत का हवाले कर दिया है। और साथ ही, यह भी अनुरोध किया गया था कि मेरे इस अदा करने का उल्लेख मेरे जीवन में ख़लीफतुल मसीह के अतिरिक्त किसी अन्य व्यक्ति के साथ नहीं किया जाए चाहिए। बलिदान, विनम्रता और ईमानदारी का यह कैसा बढ़िया उदाहरण है!

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के सहाबा में कुर्बानियों की भावना ऐसी थी कि वे इस के नए से नए अंदाज़ा धारण करते थे। । मैं एक छोटा सा उदाहरण देता हूं कि जिस में अपने आपा कुरबानी की भावना छलकती नजर आती है।

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के एक सहाबी साई दीवान शाह साहिब अपने कादियान आने का कारण कुछ यूं वर्णन करते हैं। "क्योंकि मैं गरीब हूँ चंदा तो दे नहीं सकता। कादियान जाता हूं कि मेहमान ख़ाना की चारपाइयां बुन आऊं और मेरे सिर से चंदा उतर जाए।) (असहाबे अहमद जिल्द 13 पेज 9)

माल हो तो उसकी मांग और इच्छा के बावजूद धार्मिक आवश्यकताओं को प्राथमिकता देना और ख़ुदा की राह में खर्च करना बहुत हिम्मत की बात है और महान इनाम का कारण। लेकिन वित्तीय कठिनाई के बावजूद, अल्लाह तआला के रास्ते में खर्च करने के लिए, अपना सब कुछ प्रस्तुत कर देना वास्तव में सबर और कुरबानी का चरम स्थान है।(शेष.....)

(शेख़ मुजाहिद अहमद शास्त्री)

☆ ☆ ☆

ख़ुत्बः जुमअः

हम आज यहां जलसा में शामिल होने के लिए जमा हैं। जैसा कि हर अहमदी जानता है कि हमारे यहां जलसा के लिए एकत्रित होना किसी सांसारिक शोर शराबे या किसी सांसारिक उद्देश्य के लिए नहीं है बल्कि इसलिए है कि यहां के कार्यक्रमों में शामिल होकर एक आध्यात्मिक वातावरण में रहकर अपनी आध्यात्मिकता को बढ़ाएं अपने ज्ञान की क्षमताओं को बढ़ाएं अपनी आस्था की हालत में सुधार करें। अपने व्यावहारिक परिस्थितियों में सुधार करें, अल्लाह तआला का तक्वा धारण करें और अल्लाह तआला के अधिकार और उसके बन्दों के अधिकार अदा करें।

हज़रत अकदस मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के उपदेशों के हवाले से बैअत का उद्देश्य और इस के विभिन्न मांगों का वर्णन और इस बारे में जमाअत के लोगों को बहुत प्रमुख नसीहतें।

जलसा के दिनों में इस बात का भी ध्यान रखें कि इधर उधर फिरने के स्थान पर जलसा के प्रोग्रामों में शामिल हों। सारी तकरीरें सुनें। प्रत्येक तकरीर किसी न किसी रंग में ज्ञान वर्धक, आस्था तथा रूहानियत को बढ़ाने वाली होती है।

समस्त शामिल होने वाले डियूटी देनेवालों से पूर्ण सहयोग करें। कार्यकर्ता भी प्रत्येक स्थान पर जहां भी डियूटी पर हैं अत्याधिक अच्छे व्यवहार सब से करें ।

ख़ुत्बः जुमअः सय्यदना अमीरुल मो'मिनीन हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद ख़लीफ़तुल मसीह पंचम अय्यदहुल्लाहो तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़, दिनांक 25 अगस्त 2017 ई. स्थान - जीएम अरीना कालसरूए,जर्मनी

أَشْهَدُ أَنْ لَّا إِلٰهَ إِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ لَا شَرِيكَ لَهٗ وَأَشْهَدُ أَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهٗ وَ رَسُوْلُهٗ۔ أَمَّا بَعْدُ فَأَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ۔ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۔ اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعَالَمِيْنَ۔ اَلرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۔ مٰلِكِ يَوْمِ الدِّيْنِ ۔اِيَّاكَ نَعْبُدُ وَ اِيَّاكَ نَسْتَعِيْنُ۔ اِهْدِنَا الصِّرَاطَ الْمُسْتَقِيْمَ۔صِرَاطَ الَّذِيْنَ اَنْعَمْتَ عَلَيْهِمْ ۔ غَيْرِالْمَغْضُوْبِ عَلَيْهِمْ وَلَاالضَّآلِّيْنَ ۔

हम आज यहां जलसा में शामिल होने के लिए जमा हैं। जैसा कि हर अहमदी जानता है कि हमारे यहां जलसा के लिए एकत्रित होना किसी सांसारिक शोर शराबे या किसी सांसारिक उद्देश्य के लिए नहीं है बल्कि इसलिए है कि यहां के कार्यक्रमों में शामिल होकर एक आध्यात्मिक वातावरण में रहकर अपनी आध्यात्मिकता को बढ़ाएं अपने ज्ञान की क्षमताओं को बढ़ाएं अपनी आस्था की हालत में सुधार करें। अपने व्यावहारिक परिस्थितियों में सुधार करें, अल्लाह तआला का तक्वा धारण करें और अल्लाह तआला के अधिकार और उसके बन्दों के अधिकार अदा करें।

कोई ग़ैर अहमदी तो शायद यह कह सकता है कि हमें इस बात का एहसास नहीं है कि अल्लाह तआला के अधिकार क्या हैं और उसके बन्दों के अधिकार क्या हैं लेकिन एक अहमदी यह नहीं कह सकता। उसके सामने तो बार बार इन बातों को दोहराया जाता है। हम पर हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम का यह बहुत बड़ा एहसान है कि आप ने हमें इन बातों का इतना बड़ा ख़ज़ाना दे दिया है कि जो कभी न ख़त्म होने वाला है। कई बार व्यक्ति समझता है कि एक बात मैंने पहले सुनी हुई है पढ़ी हुई है लेकिन जब वह फिर सुनता या पढ़ता है तो कोई न कोई नया बिंदु या नया पहलू इस बात का उसके सामने आ जाता है और फिर एक अहमदी जो बैअत में शामिल होता है उस के लिए बैअत की शर्तों में आप अलैहिस्सलाम ने इन अधिकारों को और हमारे कर्तव्यों को संक्षिप्त रूप से वर्णन किया है। अत: हमें हमेशा हमारा लक्ष्य ध्यान में रखना चाहिए कि इस जलसा में शामिल होने का हमारा उद्देश्य क्या है। इस समय, मैं हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के कुछ उद्धरण प्रस्तुत करूंगा।

इस बात को वर्णन फरमाते हुए कि आस्थाओं का प्रभाव कर्मों पर भी होता है हज़रत अक़दस मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फरमाते हैं कि "इस्लाम के दो हिस्से हैं एक तो यह कि ख़ुदा के साथ किसी को साझी न ठहराया जाए और उसके इहसानों के बदले में उसके पूरे आज्ञाकारी रहें। वरना अल्लाह तआला जैसे उपकारक तथा इहसान करने वाले से जो मुंह मोड़ता है वह शैतान है।" (अल्लाह तआला कि इतने बड़े एहसान हैं कि जो अल्लाह तआला की बात नहीं मानता उसका पूरा पालन नहीं करता। फरमाया फिर वह अल्लाह तआला का पालन करने वाला नहीं। रहमान का बन्दा नहीं हो सकता वह तो शैतान होगा।) फरमाते हैं कि "दूसरा भाग यह है कि प्राणियों के अधिकारों को पहचाने और उन्हें यथा शक्ति करे।" फरमाया कि "जिन क़ौमों ने मोटे गुनाह जैसे व्यभिचार,चोरी, चुग़ली, झूठ आदि अपनाए आख़िर वे मारी गईं और कुछ क़ौमें केवल एक गुनाह के करने से हलाक होती रहीं लेकिन चूंकि यह उम्मत रहम की गई है" (मुसलमान जो हैं उन पर अल्लाह तआला की एक विशेष दृष्टि है) "इसलिए, अल्लाह तआला उसे हलाक नहीं करता, अन्यथा कोई गुनाह ऐसा नहीं है जो यह नहीं करते।" (कौन सा गुनाह है जो मुसलमानों में आज नहीं है? आपने फरमाया ये सब काम कर रहे हैं।) आप फरमाते हैं कि "हर एक ने अलग अलग उपास्य बना लिए हैं।" (एक उपास्य नहीं। दुनिया में पड़ गए हैं और दुनिया को अपना उपास्य बना लिया है दुनियादारों को अपना उपास्य बना लिया है।) फरमाते हैं कि "बात यह है कि आस्थाएं अच्छी होती हैं तो इंसान से कर्म भी अच्छे होते हैं" (अगर आस्था अच्छी होगी उस पर ईमान होगा तो फिर इस आस्था की दृष्टि से नेक नीयत अगर होगी तो अच्छे कर्म भी प्रकट होंगे।) फरमाते हैं "कि इंसान सच्चा और बिना त्रुटि के आस्था धारण करता है और ख़ुदा तआला के साथ किसी को साझा नहीं करता है तो उस से कार्य अपने आप ही अच्छे होते हैं और यही कारण है कि जब मुसलमानों ने सच्ची आस्थाएं छोड़ दीं तो अंत दज्जाल आदि को ख़ुदा मानना शुरू किया।" (अभी दुनिया में हम देखते हैं कि बड़ी बड़ी सरकारें भी विश्व की शक्तियों को ख़ुदा मानने लग गई हैं, उनकी झोली में गिरने लग गई हैं, और यह आज कल हमें हर जगह नज़र आता है। इसलिए लोगों से लेकर सरकारों तक, मुस्लिम सरकारों की यह अवस्था है।) "क्योंकि दज्जाल में सभी गुण ख़ुदा तआला के स्वीकार करते हैं। अत: जब इस में सभी गुण ख़ुदा के मानते हो, तो जो उसे ख़ुदा कहे इस का उस में क्या कुसूर हुआ।? फरमाया "ख़ुद ही तो तुम ख़ुदाई का हक उसे देते हो? अल्लाह तआला चाहता है कि जैसे आस्थाएं ठीक हों वैसे ही अच्छे कर्म भी सही हों और उनमें किसी प्रकार की त्रुटि न रहे। इसलिए सीधे पथ पर होना आवश्यक है।" आप फरमाते हैं कि "ख़ुदा ने बार-बार मुझ से कहा है कि اَلْخَيْرُ كُلُّهٗ فِي الْقُرْاٰن अलख़ैरो कुल्लुहो फिल-कुरआन" फरमाते हैं कि "इस की शिक्षा है कि ख़ुदा ही एकमात्र ख़ुदा है जो कुरआन ने कहा यह बिल्कुल सच है।

(मलफूज़ात भाग 6 पृष्ठ 420-421 संस्करण 1985 ई यू. के)

सब अच्छाइयां कुरआन में तलाश करो और अल्लाह तआला की इबादत करो उस के अधिकार अदा करो और बन्दों के अधिकार हैं उन को भी लोगों को दो।

अत: अल्लाह तआला को अकेला साझी रहित समझना और उसका पूरा पालन

करना और उसका अधिकार देना, यह फिर इस बात की मांग करता है कि उसकी इबादत का भी हक़ अदा किया जाए तो इस बात का वर्णन करते हुए कि इस सिलसिले की स्थापना का उद्देश्य यह है कि ख़ुदा तआला की अनुभूति प्राप्त हो। क्यों हम अहमदी हुए हैं? क्या उद्देश्य था आप की बैअत में आने का? क्यों आप ने सिलसिला स्थापित? फरमाया ताकि अल्लाह तआला की अनुभूति प्राप्त हो और दुआ और इबादत की वास्तविकता का ज्ञान हो। आप फरमाते हैं कि "जैसे पहला आदमी जो सिर्फ दुआ करता है और तदबीर(कोशिश) नहीं करता वह ग़लती करने वाला है उसी तरह यह दूसरा जो तदबीर ही को काफी समझता है वह नास्तिक है।" (एक व्यक्ति दुआ करता है कि कोई कोशिश नहीं करता, प्रयास नहीं करता है। कोशिश करने का भी अल्लाह तआला का आदेश है तो वह भी ग़लती पर है। इसी तरह, जो कोशिश करता है और दुआ नहीं करता, वह नास्तिक है।) "परन्तु कोशिश और दुआ को आपस में मिला देना यह इस्लाम है।" (इस्लाम की शिक्षा क्या है कि कोशिश भी करो, प्रयास भी करो और अपनी पूरी क्षमताओं के साथ, अपनी पूरी शक्तियों के साथ, अपनी पूरी ताकतों के साथ जो तुम सांसारिक कोशिश कर सकते हो करो और इसी तरह दुआ भी करो। अल्लाह तआला से समक्ष गिड़गिड़ाओ और बहुत दुआ करो कि वास्तविक परिणाम इस पद्धति का ख़ुदा तआला ने तैय्यार करना है और यदि ये चीजें हैं, तो आप ने फरमाया कि तो फिर यह इस्लाम है।) फरमाते हैं कि "इसीलिए मैंने कहा है कि गुनाह और लापरवाही से बचने के लिए इस कदर कोशिश करे जो कोशिश का हक है और इतनी दुआ करे जो दुआ का हक है उसी लिए कुरआन शरीफ की पहली ही सूर फातिहा में इन दोनों बातों को समक्ष रख कर फरमाया है "इय्याक नअबुदो वइय्यक नस्तईन। इय्याक नअबुदो इसी मूल कोशिश को बताता है और प्राथमिकता इस को दी है कि पहले इंसान कारणों के माध्यम से और कोशिश का हक़ अदा करे लेकिन इसके साथ ही दुआ के पहलू को छोड़ न दे बल्कि कोशिश के साथ ही उसे ध्यान में रखे।" फरमाया कि "जब मोमिन इय्याक नअबदो कहता है कि हम तेरी इबादत करते हैं तो अचानक उस के दिल में विचार गुज़रता है कि मैं क्या चीज़ हूं जो अल्लाह तआला की इबादत करूं जब तक उस की कृपा और करम न हो। कुछ लोगों को बड़ा गर्व होता है बड़ा सोचते हैं कि हम बड़ा इबादत करने वाले हैं बड़ा नमाज़ पढ़ने वाले हैं लेकिन यह भी अल्लाह तआला की कृपा है एक वास्तविक मोमिन तो यह सोचता है कि इबादत की तौफ़ीक़ देना भी अल्लाह तआला ही की कृपा है।" फरमाया "इसलिए वह शीघ्र कहता है " इय्याक नस्तईन" सहायता भी तुझ से मांगते हैं। यह एक नाज़ुक मस्ला है जो केवल इस्लाम के अतिरिक्त किसी अन्य धर्म ने नहीं समझा। इस्लाम ने ही इसे समझा है।" आप फरमाते हैं कि "इसलिए इस्लाम के लिए आवश्यक बात है कि इस में दाख़िल होने वाला इस सिद्धांत को मज़बूत पकड़ ले। तदबीर भी करे और कठिनाइयों के लिए दुआ भी करे और कराए। अगर इन दोनों पलड़ों में से कोई एक हलका है, तो काम नहीं चलता। इसलिए प्रत्येक मोमिन के लिए आवश्यक है कि उस पर अमल करे। फरमाते हैं कि " मगर इस ज़माना में मैं देखता हूं कि लोगों की यह हालत हो रही है कि वे उपाय तो करते हैं लेकिन दुआ की उपेक्षा की जाती है बल्कि कारणों पर इतना भरोसा हो गया है कि दुनिया के कारणों को ही ख़ुदा बना लिया गया है और दुआ पर हंसी की जाती है और इसे एक बेकार चीज़ के रूप में माना जाता है। यह सारा प्रभाव यूरोप के अनुकरण से आया है, यह ख़तरनाक ज़हर है जो दुनिया में फैल रहा है।" (अब यहां, यूरोप में अल्लाह तआला पर ईमान तो बहुत कम हो रहा है। नास्तिक बहुत ज्यादा बढ़ रहे हैं और मुसलमान मानते हैं कि शायद उनकी तरक्की का रहस्य उस में है, लेकिन इस का अंजाम अच्छा नहीं होना) आपने फरमाया "यह ख़तरनाक ज़हर है जो दुनिया में फैल रहा है लेकिन अल्लाह तआला चाहता है कि इस ज़हर को दूर करे तो यह सिलसिला उसने इस लिए स्थापित किया है" (और जो अहमदी हैं उन्होंने दुनिया के प्रभाव नहीं लेने दुनियादारी के प्रभाव नहीं लेने। बल्कि अल्लाह तआला के वजूद से, उन्हें अल्लाह तआला के अस्तित्व से अल्लाह तआला की ज़ात से आगाह करना है और वास्तविक इस्लाम के बारे में उन्हें बताना है। यह एक अहमदी काम है।) फरमाया "ताकि दुनिया को अल्लाह तआला की अनुभूति हो और दुआ की वास्तविकता और इसके प्रभाव से सूचना मिले।

(मल्फूज़ात भाग 6 पृष्ठ 268-269 प्रकाशन यू. के)

लोग समझते हैं कि दुआ की कोई सच्चाई नहीं है एक अहमदी का ईमान होना चाहिए जहां उसे दुआ की स्वीकृति पर ईमान हो वहां उसे दुआ की स्वीकृति के अनुभव भी हों। अत: यह वह स्थिति है जो कि एक अहमदी को पैदा करनी चाहिए और जब यह स्थिति होगी तब ही आस्था की मज़बूती पैदा होगी। इंसान अस्थायी ख़ुदाओं के पीछे नहीं जाएगा बल्कि वास्तविक ख़ुदा की पहचान करके केवल उसके आगे झुकेगा और ख़ुदा तआला की वास्तविक पहचान और अल्लाह तआला की इबादत की मैराज के तरीके हमें आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने अपने पर उतरने वाली किताब और अपने कर्म से सिखाए। इसलिए दुआ की अनुभूति की वास्तविकता तब तक प्रकट नहीं हो सकती जब तक हम आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से दृढ़ संबंध पैदा न करें।

अत: हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने इस सिलसिले की स्थापना और अपनी बेअसत बयान फरमाते हुए एक जगह ने यह भी फरमाया कि "यदि हमारी जमाअत में से कोई अनजान हो तो वह परिचित हो जाए।" (अगर किसी को नहीं पता तो उसे पता लग जाना चाहिए) "कि इस सिलसिले को स्थापित करने से अल्लाह तआला का क्या उद्देश्य है? और हमारी जमाअत को क्या करना चाहिए? और यह भी ग़लती है कि कोई इतना ही समझ ले कि औपचारिक रूप से बैअत में प्रवेश होना ही मुक्ति है इस लिए ज़रुरत पड़ी है कि मैं असल उद्देश्य बताओं कि ख़ुदा तआला क्या चाहता है।? (केवल बैअत से मुक्ति नहीं मिलेगी, आप फरमाते हैं, मैं तुम्हें बताता हूँ कि ख़ुदा तआला क्या चाहता है।) फरमाया "सब लोग याद रखो कि औपचारिक बैअत में प्रवेश होना या मुझे इमाम समझ लेना इतनी ही बात मुक्ति के लिए कभी पर्याप्त नहीं है क्योंकि अल्लाह तआला दिलों को देखता है वह मौखिक बातों को नहीं देखता।" फरमाया "मुक्ति के लिए जैसा कि अल्लाह तआला ने बार बार कहा है वही ज़रूरी है और वह यह है कि पहले सच्चे दिल से अल्लाह तआला को अकेला साझी रहित समझे और आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को सच्चा नबी विश्वास करे और कुरआन शरीफ को अल्लाह तआला की किताब समझे कि वह ऐसी किताब है कि क़यामत तक कोई किताब या कानून नहीं आएगा, अर्थात् कुरआन के बाद किसी किताब या कानून के लिए कोई पुस्तक की आवश्यकता नहीं है। देखो ख़ूब याद रखो कि आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ख़ातमल अंबिया हैं अर्थात हमारे नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के बाद कोई नई शरीयत और नई किताब न आएगी नए आदेश न आएंगे। यही किताब और यही आदेश रहेंगे" फरमाते हैं "जो शब्द मेरी किताबों में नबी या रसूल के मेरे बारे में पाए जाते हैं इसमें हरगिज़ यह इच्छा नहीं है कि कोई नई शरीयत या नए आदेश सिखाए जाएं बल्कि इच्छा यह है कि अल्लाह तआला जब किसी को सच्ची ज़रूरत के समय किसी को मामूर करता है तो इन अर्थों में कि इलाही बातचीत का श्रेय उसे देता है और भविष्य की ख़बरें उसे देता है उस पर नबी शब्द बोला जाता है और वे मामूर नबी का ख़िताब पाता है यह अर्थ नहीं है कि नई शरीयत देता है या वह आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की शिक्षाओं को नाऊज़ बिल्लाह मनसूख़ (रद्द) करता है, लेकिन यह जो कुछ उसे मिलता है वह आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की सच्ची और सही अनुकरण से मिलता है और इसके बिना इसे मिल ही नहीं सकता, हां यह महत्त्वपूर्ण है कि जब ज़माना में गुनाह प्रचुर मात्रा में होते हैं और दुनिया वाले ईमान की वास्तविकता को नहीं समझते और उनके पास केवल छिलका या हड्डी रह जाता है और मज्जा नहीं रहती और ईमान की शक्ति कमज़ोर हो जाती है और शैतान का वर्चस्व और प्रभुत्व बढ़ जाता है और ईमानी ज़ौक और मधुरता नहीं रहती। ऐसे समय में अल्लाह तआला की आदत है ऐसे जारी है कि अल्लाह तआला अपने एक पूर्ण बन्दा को जो अल्लाह तआला की सच्ची आज्ञाकारिता में फना और डूबा होता है अपने संवाद का श्रेय दे कर भेजता है और अब इस समय उसने मुझे मामूर करके भेजा है।"

(आप फरमाते हैं कि इस समय मुझे मामूर करके भेजा है) "क्योंकि यही वह समय है जिस में इलाही मुहब्बत बिल्कुल ठण्डी हो गई है और हालांकि आम नज़र में यह देखा जाता है लोग ला इलाहा इल्लल्लाह के भी मानने वाले हैं। पैग़म्बर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की भी ज़बान से पुष्टि करते हैं ज़ाहरी तौर पर नमाज़ें भी पढ़ते हैं। रोज़े भी रखते हैं लेकिन मूल बात यह है कि रूहानियत बिल्कुल नहीं रही और दूसरी ओर उनके अच्छे कर्मों के विरुद्ध काम करना ही गवाही देता है कि वह नेक कामों के रंग में नहीं किए जाते हैं।"(जो काम किए जा रहे हैं वह नेक कर्मों के विरोध में हैं, अधिकांश मुसलमानों की यही स्थिति नज़र आ रही है।) फरमाया "बल्कि रस्म और आदत को तौर पर किए जाते हैं।" (कुछ काम अगर किए भी जाते हैं तो कुछ औपचारिक रूप से किए जाते हैं यह आदत पड़ गई है इसलिए किए जाते हैं उन्हें उसकी रूह और उसकी वास्तविकता का पता नहीं है) "क्योंकि इसमें ईमानदारी और आध्यात्मिकता का अंश मात्र नहीं है वरना क्या वजह है कि उनके अच्छे कर्मों की बरकत और नूर साथ नहीं हैं।"(अगर इस तथ्य को जानते हुए नेक

कर्म करें तो ख़ुदा को राज़ी करने के लिए करें तो इसके साथ कुछ परिणाम भी होने चाहिए उसकी बरकत होनी चाहिए।) फरमाते हैं "खूब याद रखो कि जब तक सच्चे दिल से और आध्यात्मिकता के साथ यह कार्रवाई न हो कुछ लाभ न होगा और यह कर्म काम न आएंगे। अच्छे कर्म तभी अच्छे कर्म कहलाते हैं जब उनमें किसी प्रकार का दंगा न हो। सुधार के विपरीत फसाद है नेक वह है जो उपद्रव से ख़ाली हो। जिनकी नमाज़ों में फसाद है और स्वाभाविक स्वार्थ छिपे हुए हैं उनकी नमाज़ें अल्लाह तआला के लिए हरगिज़ नहीं हैं और वे पृथ्वी से एक बालिश्त भी ऊपर नहीं जाती क्योंकि इनमें ईमानदारी की कोई भावना नहीं है और वे आध्यात्मिक रूप से खाली हैं। ऐसे कई लोग हैं जो यह एतराज़ करते हैं इस सिलिसले की ज़रूरत क्या है?" (हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने आकर जो नया सिलिसला स्थापित कर दिया है इस की क्या ज़रूरत है?) फरमाते हैं कि "वे लोग कहते हैं कि "क्या हम नमाज़ रोज़ा नहीं करते हैं"। आप ने फरमाया कि "वह इस तरह से धोखा देते हैं और कुछ आश्चर्य नहीं कि कुछ लोग जो अनभिज्ञ होते हैं ऐसी बातों को सुनकर धोखा खा जाएं और उनके साथ मिलकर यह कह दें कि जिस हालत में हम नमाज़ पढ़ते हैं, रोज़ा रखते हैं, और विर्द वज़ीफे करते हैं, फिर क्यों (एक नया समुदाय बना कर) यह फूट डाली है।" फरमाया "याद रखें कि ऐसी बातें कम समझ और अनुभूति के न होने का नतीजा हैं मेरा अपना काम नहीं है। यह फूट अगर डाल दी है तो अल्लाह तआला ने डाली है।" (मैंने जमाअत को स्थापित नहीं किया। आपने फरमाया कि मैंने तो जमाअत की स्थापना नहीं की। यह तो अल्लाह तआला ने मुझे एक जमाअत स्थापित करने के लिए कहा था और उसने इस जमाअत को बनाया है। यदि तुम कहते हो कि फूट डाल दी तो फिर अल्लाह तआला पर आरोप आता है मुझ पर आरोप नहीं आता।) फरमाया कि "जिसने इस सिलसिले को स्थापित किया है।"(वह अल्लाह तआला है उस से पूछे कि यह जमाअत क्यों बना दी है।) फरमाते हैं "क्योंकि बेईमानी हालत कमजोर होते होते यहाँ तक नौबत पहुंच गई है कि ईमानी शक्ति बिल्कुल ही लुप्त हो गई है और अल्लाह तआला चाहता है कि वास्तविक ईमान की रूह फूंके जो इस सिलिसले के माध्यम से उसने चाहा है। ऐसी अवस्था में उन लोगों का आरोप व्यर्थ और बेहूदा है तो याद रखो कि ऐसी शंका हरगिज़ किसी के दिल में नहीं आनी चाहिए और अगर पूरे विचार और चिंता से काम लिया जाए तो यह शंका आ ही नहीं सकती विचार से काम न लेने के कारण ही शंकाए आती हैं जो ज़ाहरी स्थिति को देखते हुए कह देते हैं कि और भी मुसलमान हैं उस तरह की शंकाओ से आदमी जल्द ही मर जाता है।" फरमाते हैं कि "मैंने कुछ ख़त इस प्रकार के लोगों के देखे हैं।" (हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की बैअत करने के बाद भी कुछ लोगों के ख़त आते थे।) "जो ज़ाहरी तौर पर हमारे सिलिसले में हैं और कहते हैं कि हम से जब यह कहा गया कि दूसरे मुसलमान भी ज़ाहरी तौर पर नमाज़ पढ़ते हैं और कलमा पढ़ते हैं, रोज़ा रखते हैं और अच्छा काम करते हैं और नेक काम करते हैं तो इस नए सिलिसला की क्या आवश्यकता है ?" आप फरमाते हैं कि "ये लोग बावजूद यह कि हमारी बैअत में दाख़िल हैं और ऐसी शंकाए सुन कर लिखते हैं कि हम को इस का जवाब नहीं आया। ऐसे ख़त पढ़कर मुझे ऐसे लोगों पर खेद और दया आती है कि उन्होंने हमारे मूल उद्देश्य और इच्छा को नहीं समझा वह केवल देखते हैं कि औपचारिक रूप से ये लोग हमारी तरह इस्लाम के कर्म कर रहे हैं और अल्लाह तआला के कर्तव्यों को अदा कर रहे हैं हालांकि वास्तविकता की भावना उनमें नहीं होती। इसलिए ये बातें और शंकाऐं जादू की तरह काम करती हैं ऐसे समय में वे नहीं सोचते कि हम वास्तविक शांति पैदा करना चाहते हैं जो इंसान को गुनाह की मौत से बचा लेता है और उन रस्मों और संस्कारों के मानने वाले लोगों में वह बात नहीं। उनकी नज़र ज़ाहिर पर है वास्तिवकता पर नज़र नहीं। उनके हाथ में छिलका है जिसे में मग़ज़ नहीं।"

(मलुफीज़ात जिल्द 6 पृष्ठ 235-239 संस्करण 1985 ई यू. के)

अत: जब आप की बेसत का उद्देश्य अल्लाह तआला से वास्तविक संबंध पैदा करवाना है आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की महानता की पहचान करवाना है कुरआन की हुकूमत अपने ऊपर लागू करवाना है तो हम जो आप के मानने वाले हैं हमें अपनी आस्थाओं और व्यावहारिक हालतों का सुधार भी तदनुसार करना चाहिए और केवल ऊपरी तौर पर यह न देख लें। अगर हम भी यही समझते हैं कि दूसरे मुसलमान भी हमारे तरह हैं। नमाज़ें रोज़ा रखते हैं और कोई अंतर नहीं अगर अंतर नज़र नहीं आता तो हमें चिंता करनी चाहिए। हमारी इबादतों में, हमारे दरूद में, हमारे ज़िक्र में यह अंतर होना चाहिए। मानव सेवा में एक दिली जोश और रूह होनी चाहिए जबकि दूसरों में वह नज़र नहीं आता ।

फिर हमें यह देखना होगा कि क्या हमारी बैअत यह वास्तविक रंग लिए हुए है या केवल मौखिक बातें ही हैं क्या हमारी इबादतें अल्लाह तआला को अकेला और साझी रहित समझते हुए उसके लिए हैं या नहीं। ऐसे कई लोग हैं जो केवल पांच बार नमाज़ अदा करते हैं, लेकिन रूह से अदा नहीं देते कई। बहुत से अहमदियों में भी ऐसे भी हैं कि पाँच वक्त नमाज़ें भी अदा नहीं करते और मिलने पर मुझे भी कह देते हैं कि दुआ करें कि हम अदा किया करें हालांकि यह तो एक बुनियादी बात है जो हर अहमदी का कर्तव्य है। हर मोमिन का फर्ज़ है, हर मुस्लिम का कर्तव्य है हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की बैअत में आने के बाद तो एक दिली जोश और आन्नद से नमाज़ें अदा होनी चाहिए न कि नमाज़ें पूरी न पढ़ें और आगे कह दिया कि दुआ करें कि हम नमाज़ें पढ़ लें। जब यह ख़ुद एहसास है कि हम नमाज़ें नहीं पढ़ते हैं, तो फिर कोई कोशिश भी करनी होगी। ख़ुद कोशिश करनी पड़ेगी। ख़ुद कोशिश करो और दुआ क्यों नहीं करते। اِيَّاكَ نَعْبُدُ وَ اِيَّاكَ نَسْتَعِيْنُ इय्यका नअबुदो वा इय्यका नसतईन जब कहते हैं केवल मुंह से कहने की बजाय इन शब्दों को दिल की गहराई से दोहराते हुए इस पर अनुकरण क्यों नहीं करते। आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को सच्चा नबी माना है तो आप का हर कर्म हमारे लिए उस्वा हस्ना है। इबादतों के साथ साथ, आपके उच्चतम नमूने हमारे लिए एक नमूना हैं। सामाजिक संबंध हैं। घरेलू संबंध हैं। पत्नियों से उच्च नैतिकता का नमूना आप ने हमारे लिए प्रस्तुत किया लेकिन कई ऐसे हैं जो घरों में फसाद पैदा करते हैं उनकी भावनाओं का ख्याल रखना आप ने हमें सिखाया। बच्चों से प्रेम से पेश आना आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने हमें सिखाया। दूसरों की सामान्य भावनाओं का ख्याल रखना आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने हमें सिखाया। लड़ाई झगड़ों से बचना आप ने उसकी भी हिदायत फरमाई और हमें सिखाई और अपने नमुने दिखाए। अमानत में खयानत न करना उसकी तो सख्त हिदायत इस्लाम की शिक्षा में भी है और आप ने हमें कर के दिखाई। जैसे भी हालात हों विनम्रता और विनय प्रकट करना, सच्चाई की उच्चतम गुणवत्ता स्थापित करना और कौन सा ऐसा चरित्र है जिस का उच्चतम नमूना हमें आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम में नज़र नहीं आता। यदि हम वास्तव में आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को सच्चा नबी मानते हैं और हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम को आप की ग़ुलामी में भेजा हुआ ज़माने का इमाम मानते हैं तो फिर अपने कर्मों को भी अपनी इबादतों के मानकों को हमें भी उठाना होगा। कुरआन के आदेश को देख कर, उसके करने और रोकने के आदेशों को देखकर हमें समीक्षा करनी होगी कि कौन सी नेक बातों को हम कर रहे हैं और कौन सी हम नहीं कर रहे। कौन सी बुराइयों को हम छोड़ रहे हैं और किन को हम नहीं छोड़ रहे। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के स्थान और दावे को सही रंग में पहचानने की ज़रूरत है।

अत: यह ज़माना जो दुनिया को अल्लाह तआला से दूर ले गया है और तरक्की के नाम पर हर आने वाला दिन दूर ले जाने के लिए एक नई कोशिश करता चला जा रहा है, इस समय में यह अहमदी का ही काम है कि अपने अल्लाह तआला से संबंध और उस की अनुभूति को प्राप्त करने का प्रयास करें और हर चढ़ने वाला दिन इस अनुभूति में तरक्की करने वाला हो। आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से मुहब्बत और प्रेम केवल मौखिक दावा न हो इसके केवल नारे न लगाए जाएं बल्कि मुहब्बत और प्यार का इज़हार आप के उस्वा हुस्ना को अपना कर होना चाहिए। यह नहीं कि नारे तो आप के नाम के लगा लिए और उसके बाद अत्याचार भी आप के नाम पर हो रहा है। आजकल मुसलमानों की यही हालत है अब देखते हैं कई संगठन बने हुए हैं। सरकारें भी और संगठन भी इस्लाम और आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के नाम पर अत्याचार कर रहे हैं। वह रहमतुल-लिल-आलमीन जो सारे ज़मानों के लिए दया बनकर आया था उन्हें उन्होंने अपने कर्मों द्वारा ज़ुल्म का निशान बना दिया है हालांकि यद्यपि उनकी कोशिशें सफल नहीं हो सकतीं इसलिए इस ज़माने में मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम आए थे और यही हम कोशिश करते चल जा रहे हैं कि इस्लाम की वास्तविक तस्वीर दुनिया के सामने पेश करें। अत: हमें इस वास्तविक तस्वीर को प्रस्तुत करने के लिए आप के प्रत्येक आदर्श को अपनाने की कोशिश करनी चाहिए। कुरआन करीम की हुकूमत अपने ऊपर लागू करने की कोशिश करनी चाहिए और हर समय इस कोशिश में रहना चाहिए कि हमारा हर कर्म अच्छे कर्मों में गिना जाने वाला कर्म हो। हमें यह कोशिश करनी चाहिए कि हम हर पल और हर रोज़ बल्कि हर पल इस कोशिश में हों कि हम ने शैतान को दूर होना है और रहमान के निकट होना है अन्यथा जैसा कि आप अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया है ग़ैर भी नमाज़ें पढ़ते हैं लेकिन अक्सर उन की दुआएं धरती पर रहती हैं, वे अर्श

पर नहीं जातीं। अर्श के ख़ुदा को इन नमाज़ों से कुछ भी उद्देश्य नहीं है, क्योंकि उन में ईमानदारी नहीं है उन में दुनिया की मिलावट है ऐसी नमाज़ें हैं जो हलाकत हैं। अत: हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम का ये उपदेश यह चेतावनी हमें सोचने और चिंता करने की ओर ध्यान दिलाने वाली होनी चाहिए और आप की बैअत की वास्तविकता को समझने वाली होनी चाहिए।

वास्तविक नमाज़ क्या है? इस का विवरण फरमाते हुए आप अलैहिस्सलाम फरमाते हैं कि

"नमाज़ उस समय वास्तविक नमाज़ कहलाती है जब कि अल्लाह तआला से सच्चा और पवित्र संबंध हो और अल्लाह तआला की ख़ुशी और आज्ञाकारिता में इस हद तक फना हो और यहां तक धर्म को दुनिया पर प्राथमिकता कर ले कि ख़ुदा तआला के मार्ग में जीवन देने और मरने के लिए तैयार हो जाए। जब यह स्थिति व्यक्ति में पैदा हो जाए तब कहा जाएगा कि नमाज़ नमाज़ है लेकिन जब तक यह वास्तविकता व्यक्ति के अंदर पैदा नहीं होती और सच्ची ईमानदारी और वफादारी का नमूना नहीं दिखलाता तब तक उसकी नमाज़ें और अन्य कर्म बेअसर हैं।" फरमाते हैं "कई लोग ऐसे हैं कि लोग उन्हें मोमिन और सच्चा समझते हैं मगर आसमान पर उनका नाम काफिर है इसलिए वास्तविक मोमिन और सच्चा वही है जिसका नाम आसमान में मोमिन है दुनिया की नज़र में चाहे वह काफिर ही क्यों न कहलाता हो।" (अब दुनिया हमें एक काफिर कहती है, तो हमें इस की थोड़ी सी भी परवाह नहीं अगर हमारे कर्म नेक हैं तो हमारा ख़ुदा तआला से सम्बन्ध है तो फिर हमें अल्लाह तआला मोमिन कहता है।) फरमाते हैं कि "वास्तव में यह बहुत ही कठिन घाटी है कि इंसान सच्चा ईमान लाए और अल्लाह तआला के साथ सही ईमानदारी और सच्चाई का नमूना दिखलाए। जब इंसान सच्चा ईमान लाता है, तो उस के बहुत से निशान हो जाते हैं। कुरआन शरीफ ने सच्चे मोमिनों की जो निशानियां वर्णन की हैं वह उनमें पाई जाती हैं इन लक्षणों में से एक बड़ी निशानी जो वास्तविक ईमान की है वह यही है कि जब इंसान दुनिया को पैर के नीचे कुचल कर उस से पूरी तरह अलग हो जाता है जैसा कि सांप अपनी केंचुली से बाहर आ जाता है" दुनिया फिर उस के निकट नहीं रहती। असली उद्देश्य ख़ुदा तआला को ख़ुश करना है। फरमाया "इसी तरह जब व्यक्ति नफ्सानियत की केंचुली से बाहर आ जाता है तो वह मोमिन होता है और पूर्ण ईमान के चिन्ह उसमें पाए जाते हैं अत: फरमाया اِنَّ اللّٰهَ مَعَ الَّذِيْنَ اتَّقَوْا وَّ الَّذِيْنَ هُمْ مُّحْسِنُوْنَ(अन्नहल 129) अर्थात निसन्देह अल्लाह तआला उन लोगों के साथ होता है जो तक्वा धारण करते हैं और जो तक्वा से बढ़कर काम करते हैं अर्थात मुहसनीन होते हैं।

(मल्फूज़ात भाग 6 पृष्ठ 240-241 संस्करण 1985 ई यू के)

फिर यह बयान फरमाते हुए कि वास्तविक नेकी क्या है आप फरमाते हैं कि "तक्वा के अर्थ हैं बुराई की सूक्ष्म राहों से बचना लेकिन याद रखो नेकी इतनी ही नहीं है कि एक व्यक्ति कहे कि मैं अच्छा हूँ क्योंकि मैंने किसी का माल नहीं लिया किसी का माल नहीं उड़ाया ,डाका न डाला, चोरी नहीं की और बुरी नज़र नहीं डाली और व्यभिचार नहीं करता।" फरमाते हैं "ऐसी नेकी आरिफ के निकट हंसी के योग्य है क्योंकि अगर वे बुराइयों को करे और चोरी और डकैती करे तो वह सज़ा पाएगा। तो यह कोई नेकी नहीं है कि जो आरिफ की निगाह में मूल्यवान हो बल्कि वास्तविक और असली नेकी यह है कि इंसान की सेवा करे। असली नेकी यह है कि मानव जाति की सेवा करे और अल्लाह तआला की राह में सही सिदक और सच्चाई दिखलाए और उसके रास्ते में जान तक दे देने को तैयार हो। इस कारण से, यह फरमाया है कि اِنَّ اللّٰهَ مَعَ الَّذِيْنَ اتَّقَوْا وَّ الَّذِيْنَ هُمْ مُّحْسِنُوْنَ(अन्नहल 129) अर्थात अल्लाह तआला उन लोगों के साथ है जो बुराई से परहेज़ करते हैं और अच्छे कर्म करते हैं। यह ख़ूब याद रखो कि केवल बुराई से परहेज़ करना कोई अच्छाई की बात नहीं है, जब तक कि उसके साथ नेकियां न करे। कई लोग ऐसे मौजूद होंगे जिन्होंने कभी व्यभिचार नहीं किया, कत्ल नहीं किया, चोरी नहीं की, डाका नहीं मारा और बावजूद अल्लाह तआला की राह में कोई सिदक तथा सच्चाई का नमूना उन्होंने नहीं दिखाया या मानव जाति की कोई सेवा नहीं की और इस तरह पर कोई नेकी नहीं की। अत: अज्ञानी होगा वह व्यक्ति जो इन बातों को प्रस्तुत करके उसे नेकियां करने वालों में प्रवेश करे क्योंकि यह तो बुरी आदतें हैं। केवल इतने विचार से बुरी आदत वाला अल्लाह तआला के औलिया में प्रवेश नहीं हो जाता है।" फरमाया कि "चोरी या विश्वासघात करने वाले रिशवत लेने वाले के लिए अल्लाह तआला की आदत में है कि उसे यहाँ सज़ा दी जाती है वह नहीं मरता जब तक सज़ा नहीं पा लेता। याद रखें कि केवल इतनी ही बात का नाम नेकी नहीं है। तक्वा कम स्तर है। इस का उदाहरण तो ऐसा है जैसे किसी बर्तन को अच्छी तरह साफ किया जाए ताकि इसमें अच्छा खाना डाला जाए। अब अगर किसी बर्तन को ख़ूब साफ करके रख दिया जाए लेकिन इसमें खाना न डाला जाए तो क्या इससे पेट भर सकता है? हरिगज़ नहीं। इसी तरह पर तक्वा को समझो, नफ्स अम्मारह के बर्तन को साफ करना है।

(मल्फूज़ात भाग 6 पृष्ठ 241-243 संस्करण 1985 ई यू के)

अत: बर्तन को साफ करके उसमें फिर नेक कर्मों का खाना भरना और फिर इसे खाना ही वह मूल बात है जो व्यक्ति को अल्लाह तआला की नज़दीकी दिलाती है और ख़ुशी पाने वाला बनाती है।

बहुत बड़ी-बड़ी बीमारियों में से एक बुराई और गुनाह झूठ है इससे बचने की ओर ध्यान दिलाते हुए एक अवसर पर हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फरमाते हैं कि

"मैंने ग़ौर किया है कुरआन शरीफ में कई हज़ार आदेश हैं उनकी पाबन्दी नहीं की जाती। छोटी छोटी बातों का उल्लंघन कर लिया जाता है, यहां तक कि देखा जाता है कि कुछ झूठ तो दुकानदार बोलते हैं और कुछ मसाले दार झूठ बोलते हैं हालांकि अल्लाह तआला ने इसे गन्दगी के साथ रखा है, लेकिन कई लोग देखते हैं कि मिलावट कर के स्थितियां वर्णन करने से नहीं रुकते है और उस को कोई गुनाह नहीं समझते। हंसी के रूप में भी झूठ बोलते हैं। मनुष्य सिद्दीक़ नहीं कहला सकता जब तक झूठ के सभी क्षेत्रों से परहेज़ न करे।

(मल्फूज़ात भाग 5 पृष्ठ 120 संस्करण 1985 ई यू के)

एक उच्च आचरण लोगों की ग़लितयों को नज़र अन्दाज़ करना भी है जो केवल आचरण ही नहीं बल्कि इससे व्यक्ति कई झगड़ों और फसादों से भी बचता है और दुनिया को भी बचाता है तो इस बात का वर्णन फरमाते हुए हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फरमाते हैं कि

"मैं देखता हूं कि जमाअत में परस्पर झगड़े बहुत हो जाते हैं और मामूली मामूली विवाद से फिर एक दूसरे के सम्मान पर हमला करने लगता है।" (ज़रा सी मामूली रंजिशें होती हैं और फिर वे बढ़ते बढ़ते इतनी हो जाती है कि एक दूसरे के सम्मान पर हमला करने लग जाते हैं।) "और अपने भाई से लड़ता है। यह बहुत अनुचित हरकत है।" फरमाया "यह नहीं होना चाहिए बल्कि एक अगर अपनी ग़लती को स्वीकार कर ले तो क्या हर्ज है।" (दो लड़ रहे हैं तो एक सुलह करने के लिए मान ले।) फरमाया, "कुछ लोग थोड़ी थोड़ी बात पर दूसरे का अपमान किए बिना नहीं छोड़ते। इन बातों से बचना आवश्यक है अल्लाह तआला का नाम सत्तार है फिर यह क्यों अपने भाई पर रहम नहीं करता और क्षमा और छिपाने से काम नहीं लेता चाहिए कि अपने भाई की ग़लतियों को छिपाए और उसकी इज़्ज़त तथा सम्मान पर हमला न करे।" फरमाते हैं "एक छोटी सी किताब में लिखा देखा है कि एक बादशाह कुरआन लिखा करता था, एक मुल्ला ने कहा कि यह आयत ग़लत लिखी है। राजा ने फिर इस आयत पर एक दायरा ख़ींच दिया कि इस को काट दिया जाएगा। जब वह चला गया तो सर्कल को काट दिया। जब राजा से पूछा गया कि ऐसा क्यों किया तो उसने कहा कि दरअसल वह ग़लत था।" (जो मौलवी मेरा सुधार करने आया था वह ग़लत था) "लेकिन मैंने उस समय सर्कल खींच दिया कि उस का दिल न टूटे।" (उसके दिल में शर्मिंदगी न हो है कि मैं इस से बहस करूं।) फरमाते हैं कि "यह बहुत अंहकार की जड़ और बीमारी है कि दूसरे की ग़लती पकड़ कर फैलाया जाए। ऐसे मामलों से नफ्स ख़राब हो जाता है। इस से परहेज़ करना चाहिए। अत: ये सब बातें तक्वा में सम्मिलित हैं और जो आंतरिक तथा बाहरी मामलों में तक्वा से काम लेने वाला फिरशतों में सम्मिलित किया जाता है क्योंकि उसमें कोई बग़ावत नहीं रह जाती।" फरमाते हैं तक्वा हासिल करो क्योंकि तक्वा के बाद ही ख़ुदा तआला की बरकतें आती हैं। मुत्तकी दुनिया की बलाओं से बचाया जाता है ख़ुदा उन की बुराइयों को छुपाने वाला बन जाता है। जब तक यह तरीका न धारण करोगे, तब तक इसका कोई फायदा नहीं है। ऐसे लोग मेरी बैअत का लाभ नहीं उठा सकते। लाभ हो तो किस तरह जब कि एक अत्याचार तो भीतर ही रहा। अगर वही जोश अंहकार, गर्व, और दिखावा और शीघ्र गुस्सा में आ जाना बाकी है जो दूसरों में भी है तो अन्तर ही क्या?" फरमाते हैं कि "यदि नेक एक ही हो और वह सारे गांवों में एक ही हो तो लोग करामत की तरह उस से प्रभावित होंगे, नेक इंसान जो अल्लाह तआला से डर कर नेकी धारण करता है, उस में एक रब्बानी रौब होता है और दिलों में पढ़ा जाता है कि यह ख़ुदा वाला है। यह बिल्कुल सच्ची बात है कि जो ख़ुदा तआला की तरफ से आता है, ख़ुदा तआला अपनी महानता से उसे हिस्सा देता है और यही तरीका

नेकी का है" फरमाया "अत: याद रखो कि छोटी छोटी बातें में भाइयों को दु:ख देना ठीक नहीं है। आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम उच्च नैतिकता से परिपूर्ण हैं, और इस समय अल्लाह तआला ने अंतिम नमूना आप के चरित्र को स्थापित किया है।" (सारे जो दुनिया के चरित्र हैं। ये आप पर आकर समाप्त हो गए।) फरमाया "आप प्रत्येक के लिए नमूना हैं।" फरमाया "इस समय भी अगर वही दरंदगी रही तो फिर सख्त अफसोस और हतभागा है।" (आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से बैअत का दावा है आप के ग़ुलाम की बैअत का दावा है तो अपने चरित्र को भी ठीक करना होगा। यदि हम फिर भी इसी प्रकार रहेंगे कि एक-दूसरे की टांगें खींचते रहें। एक दूसरे को नुकसान पहुंचाने की कोशिश करते रहें। तो बहुत अफसोस है और कम नसीबी है।)फरमाया "अत: दूसरों पर दोष न लगाओ, क्योंकि कभी कभी कुछ लोग दूसरे पर दोष लगा कर ख़ुद उस में गिरफ्तार हो जाया करते हैं। यदि वह दोष उस में नहीं है, लेकिन अगर वह दोष सच में उस में है तो उस का मामला फिर ख़ुदा तआला के साथ है। फरमाते हैं कि "बहुत से लोगों की आदत होती है कि वे अपने भाइयों पर शीघ्र आरोप लगा देते हैं इन बातों से बचो। मानव जाति को लाभ पहुंचाओं और अपने भाईयों से सहानुभूति और पड़ोसियों से नेक व्यवहार करो। अपने भाइयों के लिए भलाई करो और सब से पहले शिर्क(बहुदेववाद) से बचो कि यह तक्वा की प्रारंभिक ईंट है।

(मल्फूज़ात भाग 6 पृष्ठ 341-344 संस्करण 1985 ई यू के)

अपने भाई की ग़लती देख कर क्या तरीका धारण करना चाहिए? इस बारे में आप ओर अधिक फरमाते हैं। आप फरमाते हैं कि

"सुधार, तक्वा, नेकी और नैतिक स्थिति को ठीक करना चाहिए।" फरमाते हैं "मुझे मेरी जमाअत का एक बड़ा दु:ख है कि अभी तक ये लोग आपस में ज़रा ज़रा सी बात पर चिढ़ जाते हैं। सामान्य मज्लिस में किसी को बेवकूफ कह देना भी बड़ी ग़लती है। यदि आप अपने भाई की कोई ग़लती देखो तो उसके लिए दुआ करो कि ख़ुदा उसे बचा ले। यह नहीं कि शोर डालो। जब किसी का बेटा शरारती होता है, तो उसे कोई भी शीघ्र नष्ट नहीं करता, बल्कि वह एक कोने में समझता है कि यह बुरा काम है। इस से रुक जाओ। अत: जिस तरह नर्मी और विनय से अपनी औलाद से मामला करते हो वैसे ही आपस में भाइयों से करो। जिस के चिरत्र अच्छे नहीं हैं मुझे उस के ईमान का ख़तरा है क्योंकि उस में अंहकार की एक जड़ है। अगर ख़ुदा राज़ी न हो तो मानो वह बर्बाद हो गया। अत: जब उस की अपनी चरित्र की अवस्था की यह हालत है तो इसे दूसरों को कहने का क्या अधिकार है?" आप फरमाते हैं कि "ख़ुदा तआला फरमाता है। इसका यही अर्थ है कि अपने स्वार्थ को भूल कर दूसरों की बुराइयों को न देखता रहे क्योंकि वे ख़ुद तो इन बातों का पाबन्द नहीं होता इसी लिए अन्तत: लेमा तकूलून माला तफअलून की तरह हो जाता है।"

(मल्फूज़ात भाग 6 पृष्ठ 368-369 संस्करण 1985 ई यू के)

फिर शीघ्र क्रोध में आ जाने वाले सहायता और सम्मान से वंचित हो जाते हैं वे मदद से वंचित होते हैं, जिन को ग़ुस्सा आता है इस बारे में वर्णन करते हुए आप फरमाते हैं कि "याद रखो जो व्यक्ति सख्ती करता है और क्रोध में आ जाता है उस की ज़बान से हिकमत की बातें बाहर नहीं आ सकती हैं, वह दिल हिक्मत की बातों से वंचित किया जाता है, जो अपने मुकाबला वाले के सामने जल्दी ग़ुस्सा में आ कर वश से बाहर हो जाता है, गन्दी ज़बान और बेलगाम के होंठ अच्छी बातों के स्रोत से वंचित किए जाते हैं। क्रोध और ज्ञान दोनों इकट्ठा जमा नहीं हो सकते। जो शीघ्र क्रोध में आ जाता है, इसका ज्ञान मोटा और समझ मोटी होती है।" (गुस्सा में आने वाले की बुद्धि मोटी हो जाती है। "और किसी भी क्षेत्र में सहायता और मदद नहीं दिए जाते।" फरमाते हैं कि "क्रोध आधा जुनून है जब यह अधिक भड़कता है तो पूरा जुनून हो जाता है।" फरमाते हैं कि "हमारी जमाअत को चाहिए के समस्त न करने वाले कामों से दूर रहा करें क्योंकि वह शाखा जो अपने तने के साथ एक सच्चा सम्बन्ध नहीं रखती हैं वह फल के बिना रह जाती हैं। अत: देखो कि अगर तुम लोग हमारे वास्तविक उद्देश्य को नहीं समझते हैं और शर्तों का पालन नहीं करोगे" (जिन शर्तों पर बैअत की है) "तो उन वादों के वारिस तुम कैसे बन सकते हो जो ख़ुदा तआला ने हमें प्रदान किए हैं।"

(मल्फूज़ात भाग 5 पृष्ठ 126-127 संस्करण 1985 ई यू के)

इसलिए अपने वादों का हिस्सा बनने के लिए,आप की दुआओं से लाभ पाने के लिए अगर किसी में बुरी आदतें हैं तो इन हालतों को बदलने की ज़रूरत है। यहां भी जलसा में बहुत से लोग इस लिए आते हैं कि हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की दुआओं से हिस्सा लें, लेकिन अगर व्यावहारिक स्थिति ठीक नहीं है, तो दुआओं से कैसे लाभ प्राप्त मिलेगा? यह तो आप ने ख़ुद ही फरमा दिया।

क्रोध की बजाय, किस प्रकार की स्थिति एक मोमिन की होनी होना चाहिए। इस बारे में आप फरमाते हैं कि "ऐसा न हो कि तुम्हारा इस समय का ग़ुस्सा कोई ख़राबी पैदा करे जिस से सारा सिलसिला बदनाम हो या कोई मुकदमा बने जिस से सब को फिक्र हो।" (यहां भी जलसा में लोग आते हैं कुछ नौजवान लड़ाइयां भी कर लेते हैं, कुछ पुराने झगड़ों के लेकर खड़े हो जाते हैं, इसलिए जब यह चीज़ें बाहर निकलती हैं तो सिलिसला बदनाम हो जाता है। फरमाया, "सब नबियों को गालियां दी गई हैं। यह नबियों की विरासत है, हम इस से कैसे वंचित हो सकते हैं?" (हमें भी लोग गालियां देते हैं।) "ऐसे बन जाओ मानो ग़सब के बिना हो। तुम को मानो क्रोध की शक्तियां ही नहीं दी गई हैं।" (अब यह भी ग़ैर-लोगों के लिए है कि यदि वे तुम्हें गालियां देते हैं तो तुम ने अपना क्रोध दबाना है, लेकिन आपस में तो बिल्कुल यह हालत नहीं होनी चाहिए कि एक दूसरे पर क्रोध प्रकट हो रहा हो।) फरमाया कि "देखो अगर कुछ भी अंधेरे का हिस्सा है तो कोई रोशनी नहीं आएगी, नूर और अन्धेरा जमा नहीं हो सकते। जब नूर आ जाएगा तो अन्धेरा नहीं रहेगा। तुम अपनी सारी शक्तियों को अल्लाह तआला की आज्ञाकारिता में लगा दो और जो कमी किसी शक्ति में हो, उसे पान वाले की तरह जो गन्दे पान तलाश कर के फैंक देता है अपनी गंदी आदतों को बाहर निकाल फैंको और सारे अंगों का सुधार कर लो यह न हो कि नेकी करो और नेकी में बुराई मिला दो। तौब: करते रहो। इस्तिग़फार करो। हर समय दुआ के साथ काम लो।"

(मल्फूज़ात भाग 5 पृष्ठ 128 संस्करण 1985 ई यू के)

फरमाते हैं कि "हमारे विजय के हथियार के इस्तिग़फार, तौब:, धार्मिक ज्ञान का परिचय, ख़ुदा की महानता को समक्ष रखना और पांच बार की नमाज़ों को अदा करना है। नमाज़ दुआ की कबूलियत की कुंजी है। जब नमाज़ पढ़ो तो इस में दुआ करो उपेक्षा न करो और हर ग़लत काम से चाहे वह अल्लाह तआला के अधिकारों के बारे में हो चाहे वह बन्दों के अधिकार के बारे में हो बचो।"

(मल्फूज़ात भाग 5 पृष्ठ 303 संस्करण 1985 ई यू के)

अल्लाह तआला हमें शक्ति प्रदान करे कि हम इन मानकों को प्राप्त करने वाले हों और आप की बैअत में आकर आप की बेअसत के उद्देश्य को समझने वाले और इसे पूरा करने के लिए अपनी समस्त क्षमताओं और सामर्थ्यों का उपयोग करने वाले हों और दुनिया को भी इस उद्देश्य के बारे में जागरुक करने वाले हों।

जलसा के दिनों में,इस बात का भी ध्यान रखें कि इधर उधर फिरने के स्थान पर जलसा के कार्यक्रमों में शामिल हों। सभी तकरीरें सुनें। प्रत्येक भाषण किसी न किसी रंग में ज्ञान वर्धक, विश्वास और आध्यात्मिक विकास का माध्यम है। प्रशिक्षण विभाग भी इस बात को सुनिश्चित करने का भी प्रयास करे कि बिना किसी जायज़ कारण के लोगों के इधर उधर फिरने के स्थान पर जलसा गाह में बैठें। जलसा सुनने के लिए आए हैं और इस की कोशिश करें। इसी तरह सभी शामिल होने वाले ड्यूटी देने वालों से पूर्ण सहयोग करें। पार्किंग में भी स्कैनिंग में भी कई बार लंबी लाइनें लगती हैं। कभी-कभी भोजन में कठिनाई होती है, इसी प्रकार थ बाथरूम में भी और वहां भी कि अगर सफाई की आवश्यकता होती है, तो ख़ुद ख्याल भी रखें। सिर्फ यह न देखें कि सफाई कर्मचारी वहां मौजूद हैं तो सफाई कर देंगे बल्कि स्वयं सफाई का का ख्याल रखना चाहिए। सफाई भी ईमान का हिस्सा है।

(सहीह मुस्लिम कितबुत्तहारत हदीस 534)

इसी प्रकार कार्यकर्ता भी प्रत्येक स्थान पर जहां भी ड्यूटी पर है अच्छे चरित्र से एक दूसरे के साथ व्यवहार करें। जो भी हालत हो किसी कार्य करने वाले और वालियों के हालात ऐसा न हों जो ग़लत प्रभाव डाल रहे हों। हमेशा मुस्कुराते हुए सेवा करें। चाहे जो ही हालात हों। खासकर शामिल होने वाले और ड्यूटी देने वाले भी ध्यान रखें हैं कि उन्होंने अपने माहौल पर भी नज़र रखनी है और ये सिक्योरिटी के लिए बड़ी गहरी चीज़ होती है और आज कल के हालात में यह विशेष रूप से बहुत महत्त्वपूर्ण बात है और सब से बढ़ कर इन दिनों में दुआओं और ज़िक्रे इलाही पर ज़ोर दें इसमें समय व्यतीत करें। अपने लिए भी दुआएं करें जमाअत के लिए भी दुआ करें। मुस्लिम उम्मत के लिए भी दुआएं करें कि अल्लाह तआला उन्हें अक्ल दे और ये ज़माने के इमाम को पहचानने वाली हो और सामान्य रूप से सारी दुनिया के लिए भी दुआ करें जैसे यह वह तबाही की तरफ जा रही है। अल्लाह तआला इस को तबाही से बचा ले और अक्ल और समझ दे और यह उस ख़ुदा की पहचान करने वाले बन जाएं।

☆ ☆ ☆

सय्यदना हज़रत अमीरुल मोमिनीन ख़लीफतुल मसीह अल्ख़ामिस अय्यदहुल्लाह तआला बिनस्त्रिहिल अज़ीज़ का दौरा जर्मनी, अप्रैल 2017 ई. (भाग -11)

☆ **आप लोग कार्य क्षेत्र में समय के ख़लीफा के प्रतिनिधि हैं, आप ने इस प्रतिनिधित्व का हक अदा करना है**

कार्य क्षेत्र में आकर आप के कंधों पर बड़ी ज़िम्मेदारी आ पड़ी है

आप की ज़िम्मेदारी यह भी है कि जहां अपनों का प्रशिक्षण करना है वहाँ दूसरों को इस्लाम का सुन्दर संदेश भी पहुंचाना है।

आप के दिलों से अब सभी प्रकार के सांसारिक भय दूर हो जाने चाहिए और इस सांसारिक ख़ौफ को दिल से दूर करके अल्लाह तआला से संबंध में हर पल आप बढ़ते रहने की कोशिश करनी चाहिए।

नफिल अदा करने के लिए जागें, नफिल ही हैं जो अल्लाह तआला से संबंध बनाने और संबंध बढ़ाने में महत्त्वपूर्ण भूमिका अदा करते हैं हमेशा याद रखें कि आप लोगों को नफलों को अदा करने की तरफ ध्यान होना चाहिए ।

आप का सब से बड़ा लक्ष्य एकेश्वरवाद की स्थापना, हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम इसी उद्देश्य के लिए आए हैं कि तौहीद की स्थापना हो और बन्दा का ख़ुदा तआला से संबंध पैदा हो और दूसरा उद्देश्य मनुष्य के आपस के अधिकार हैं उनकी तरफ ध्यान दिलाना है।

अगर अल्लाह तआला से संबंध पैदा करें तो तब ही तौहीद की स्थापना के लिए भरपूर कोशिश कर सकते हैं, इबादत के बिना यह असंभव है कि आप तौहीद की स्थापना कर सकें।

इबादतों और नमाज़ों की तरफ ध्यान देने के बाद कुरआन का पढ़ना, उस पर विचार करना उसकी तफ़सीरें पढ़ना, यह एक बहुत बड़ा काम है।

आप को कम से कम न्यूनतम आधा घंटा दैनिक, इससे अधिक हो तो और भी बेहतर है, हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम किसी न किसी किताब का अध्ययन करते रहना चाहिए आप के लिबास में आप के अच्छे नमूने हों और प्रत्येक व्यक्ति आप को देखकर यह कहने वाला हो कि ये वे लोग हैं जो जमाअत का सच्चा प्रतिनिधित्व करने वाले हैं, ये वे लोग हैं जो अपने सम्मानों को तो दाओ पर लगा सकते हैं लेकिन जमाअत के सम्मान पर कभी अंतर नहीं आने देंगे।

मुबल्लिग़ों को सय्यदना हज़रत ख़लीफतुल मसीह अलख़ामिस अय्यदहुल्लाह तआला बेनसरेहिल अज़ीज़ की सुनहरी नसीहतें।

(रिपोर्ट: अब्दुल माजिद ताहिर, एडिशनल वकीलुत्तबशीर लंदन)

(अनुवादक: शेख मुजाहिद अहमद शास्त्री)

20 अप्रैल 2017 (दिन गुरूवार) (शेष....)

एक सदस्य ने यह सवाल किया कि यदि कोई सदस्य वादा लिखवाने के बाद पूरा न कर सके तो क्या इसके लिए बकाया अदा करना ज़रूरी होगा? इस सवाल के जवाब में हुज़ूर अनवर ने फरमाया जिसने उत्सुकतापूर्वक वादा लिखवाया और किसी वजह से अदा नहीं कर सका तो अगर अनिवार्य चंदा माफ हो सकता है तो यह तो अनिवार्य चंदा तो नहीं है।

एक सदस्य ने सवाल किया कि यदि कोई जमाअत का सदस्य चंदा अदा करती है लेकिन संगठनात्मक चंदा अदा नहीं करती तो क्या वह अस्थायी अनिवार्य चंदा अदा कर सकती है? उस पर हुज़ूर अनवर ने फरमाया दे सकती है, लेकिन वह लजना की ओहदेदार नहीं बन सकती, यह लजना के नियमों में लिखा है क्योंकि वह लजना के चंदा अदा नहीं करती।

एक सैक्रेटरी ने सवाल किया कि लगभग 300 ऐसी सदस्य हैं जिनसे संपर्क नहीं होता। उस पर हुज़ूर अनवर ने फरमाया कि उनके पास प्रशिक्षण सैक्रेटरी जाएं और संपर्क करें।

एक सदस्य ने सवाल किया जमाअत के स्तर पर तहरीक जदीद, वक्फ जदीद के सेमिनार होते हैं और वादों को बढ़ाने के लिए परचियाँ वितरित की जाती हैं। उस पर हुज़ूर अनवर ने फरमाया परचियाँ बांटने की ज़रूरत नहीं है। परचियाँ देकर भूल जाते हैं इसे छोड़ दें, यदि कोई चंदा बढ़ाना चाहता है फार्म पर लिखकर भेज दे।

एक सवाल यह किया गया कि हम शहीदों के नाम पर चंदा दे सकते हैं? उस पर हुज़ूर अनवर ने फरमाया लोग आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के नाम पर, सहाबा के नाम पर देते हैं।

एक सदस्य ने सवाल किया कि क्या वफात पा गए लोगों की वसीयत का चंदा औलाद जारी रख सकती है? इस पर हुज़ूर अनवर ने कहा उन का मामला खत्म हो गया। अल्लाह तआला के पास है।

एक सवाल यह किया गया कि मज्लिस में दो सदस्य ऐसी हैं जो तजनीद में तो शामिल हैं लेकिन वे चंदा अदा नहीं करतीं और न इजलासों में शामिल होती हैं। हुज़ूर अनवर ने पूछा कि क्या उन्हें किसी कार्यकारिणी सदस्य से लड़ाई तो नहीं? आप रिपोर्ट में भी लिखा करें। उनके घर जाएं। उनसे मिलें और अगर उनकी कोई सहेली है, उसके द्वारा उनसे संबंध बनाएँ। जो बर्बाद हो रहा इसे बर्बाद नहीं करना।

एक सवाल यह किया गया कि ऐसे सदस्य जो लगातार जमाअत के कार्यक्रमों, इज्लासों में नहीं आतीं। उनकी वजह से सदर स्थानीय मजलिस के चुनाव में समस्याएं होती हैं और कोरम पूरा नहीं होता इसपर हुज़ूर अनवर ने फरमाया आप यह लिख दिया करें कि स्थायी संपर्क में नहीं हैं, इजलासों में नहीं आतीं। एकाध की समस्या है तो सदर लजना को चुनाव से पहले लिखकर भेज दें कि इस मैम्बर का संपर्क बिल्कुल नहीं है। इसलिए चुनाव के दौरान मजलिस की कुल तजनीद से निकाल दें। इस तरह अपने कोरम पर असर नहीं पड़ेगा।

एक सवाल यह किया गया कि जमाअत ने 2023 में रेडियो चैनल खोलने का इरादा किया है। इसमें लजना कैसे मदद कर सकती है? उस पर हुज़ूर अनवर ने फरमाया इसमें लजना मदद कर सकती है। UK में हमारे रेडियो (Voice of Islam) की टीम है, लजना भी इसमें हिस्सा लेती है। उनसे संपर्क कर लें।

एक सवाल यह किया गया कि जो वक्फे नौ बच्चे अपना वक्फ जारी नहीं रख पाते क्या उन्हें कोई पद दिया जा सकता है? इस सवाल के जवाब में हुज़ूर अनवर ने फरमाया दिया जा सकता है।

राष्ट्रीय कार्यकारिणी लजना इमाअल्लाह जर्मनी और स्थानीय मज्लिसों की सदारत की हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह बेनसरेहिल अज़ीज़ के साथ यह मुलाक़ात साढ़े 8 बजे तक जारी रही। इस के बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह बेनस्रेहिल अज़ीज़ मस्जिद मर्दाना हॉल में पधारे और कार्यक्रम के अनुसार आमीन का समारोह हुआ।

आमीन का समारोह

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने निम्नलिखित 29 बच्चों और बच्चियों से कुरआन की एक एक आयत सुनी और इस के बाद दुआ करवाई।

प्रिय हज़ीम अब्दुल्लाह, नज़ीर अहमद, ख्वाजा ख़ाकान नासिर, उमर फ़ारूक़ जोईया, नबील अहमद, शोएब ख़ान, ज़ीशान आमिर, ताहिर यसिर काहलों, तलहा गफ्फार, ज़की अहमद अज़ीज़, सईद अहमद, इस्माइल रहमान, अब्दुल मुकीत, मलिक मामूर अहमद, मुहम्मद अहमद , मौहद अहमद. हाशिर अहमद साही।

प्रिया कानता अहमद, तानिया राणा, माया यूसफ, अरबिया अवान,युसरा शाह, फातिहा राय, ज़ायना चौधरी, अनीकह अहमद, दानिया सोहेल, अंजला अज़मत चट्ठा, सवेरा, तोबा नदीम निगारिश अहमद।

आमीन के इस समारोह के बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने नमाज़ मग़रिब और इशा जमा करके पढ़ाई। नमाज़ पढ़ने के बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह बेनसरेहिल अज़ीज़ अपने निवास पर तशरीफ़ ले गए।

21 अप्रैल 2017 (दिन शुक्रवार)

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने सुबह सवा छः बजे पधार कर नमाज़े फ़ज्र पढ़ाई। नमाज़ पढ़ने के बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह बेनस्रेहिल अज़ीज़ अपने निवास पर तशरीफ़ ले गए। सुबह हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह ने दफ्तर की डाक पोस्ट और ख़त देखे और हिदायतें दीं। आज जामिया अहमदिया जर्मनी स्नातक होने वाले मुबल्लिग़ों की दूसरी कक्षा " शाहिद " को सनद दिए जाने का समारोह आयोजित हो रहा था।

जामिया अहमदिया जर्मनी का आरम्भ जर्मनी के केंद्र बैयतुस्सबूह के एक भाग में अगस्त 2008 ई में हुआ था। हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने अपने दौरा जर्मनी के दौरान 20 अगस्त 2008 ई को जामिया अहमदिया जर्मनी का उद्घाटन फरमाया था। ख़ुद्दामुल अहमदिया जर्मनी ने बैयतुस्सबूह अपने मुख्य केंद्र " एवाने ख़िदमत" में अपने दफ्तरों के साथ जुड़े दोनों हॉल और गैलरी खाली कर दी थीं। इन दोनों हॉलों में जामिया दफ्तर, प्राचार्य दफ्तर, स्टाफ रूम और कक्षा स्थापित की गईं और छात्रों की असम्बली के लिए जगह तैयार की गई। छात्रों के छात्रावास के लिए बैयतुस्सबूह में मौजूद तीन मंजिला आवासीय इमारत उपयोग में लाई गई। छात्रों की ज़रूरत के लिए एक विशाल पुस्तकालय पहले से ही बैयतुस्सबूह में मौजूद था। इसी तरह मस्जिद, खाने के कार्यक्रमों के लिए हॉल, रसोई, डाइनिंग हॉल, स्पोर्ट्स हॉल और पार्किंग के लिए व्यापक जगह यह सब कुछ बैयतुस्सबूह में पहले से ही उपलब्ध थी। इसलिए अगस्त 2008 ई में बैयतुस्सबूह में जामिया अहमदिया शुरू हुआ। इस दौरान फ्रैनकफोर्ट से 57 किलोमीटर दूर बसे शहर रीडसटड में " मस्जिद अज़ीज़ " के साथ सटे खाली प्लॉट जिसका क्षेत्रफल 5700 वर्ग मीटर है जामिया का भवन निर्माण के लिए खरीदा गया।

15 दिसंबर 2009 ई को हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने अपने दौरा जर्मनी के दौरान जामिया अहमदिया जर्मनी की नई इमारत का शिलान्यास (बुनियाद) रखी। तीन साल की अवधि में इस इमारत का निर्माण कार्य पूरा हुआ। 17 दिसंबर 2012 को हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ अपने सफर जर्मनी के दौरान इस नई इमारत का उद्घाटन किया। इस ज़मीन के पश्चिमी भाग में जामिया के शिक्षण और प्रशासनिक मामलों और दफ्तर, पुस्तकालय पर आधारित दो मंज़िला इमारत है। इस नई इमारत में सात कमरे, दो बड़े हॉल हैं। पुस्तकालय है। कम्प्यूटर कक्ष है। प्रिंसिपल का दफ्तर और स्टाफ रूम के अतिरिक्त अन्य प्रशासनिक दफ्तर हैं। एक बड़ा किचन और डाईनिंग हॉल है। विभिन्न गैलरीज़ और लाबीज़ हैं। जबकि इस ज़मीन के पूर्वी हिस्से में मसरूर हॉस्टल दो मंजिला इमारत है। हॉस्टल की इस इमारत में बड़े आकार के कुल 31 कमरे हैं और एक बड़ा हॉल कामन रूम के रूप पर है, जहाँ इनडोर खेल का प्रबंधन है। हॉस्टल के एक हिस्से में कपड़े धोने के कमरे भी है। छात्रों के खेल के लिए फुटबॉल, वॉलीबॉल और बास्केटबॉल के लिए भी एक जगह तैयार की गई है।

कुछ समय पहले जामिया की ज़मीन से लगी एक निर्माण हुई इमारत भी तीन लाख साठ हज़ार यूरो में खरीदी गई है। इसका कुल क्षेत्रफल 2500 वर्ग मीटर है और इसमें से निर्माण हुआ हिस्सा 1045 वर्ग मीटर है। यह इमारत दो मंजिला है जो एक बहुत बड़े हॉल और 14 कमरों पर आधारित है। इन चौदह कमरों को थोड़े से परिवर्तन के साथ उस्तादों के लिए तीन परिवारों रहायशों और दो एकल रहायशों में बदल दिया गया है।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ सुबह दस बजकर चालीस मिनट पर अपने निवास से बाहर आए और शहर रीडसटड के लिए प्रस्थान किया। लगभग पचास मिनट की सफर के बाद साढ़े ग्यारह बजे हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ जामिया अहमदिया में तशरीफ़ लाए। आदरणीय शमशाद अहमद क़मर साहिब प्रिंसिपल जामिया अहमदिया जर्मनी और आदरणीय मुबारक अहमद तनवीर साहिब सदर शिक्षा कमेटी ने उस्तादों और स्टाफ के साथ हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ का स्वागत किया और हाथ मिलाने का सौभाग्य प्राप्त किया।

आज के आयोजन के लिए जामिया परिसर में एक मार्की लगाई गई थी। हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनसरेहिल अजीज इस मार्की में स्टेज पर पधारे। इस समारोह में जामिया अहमदिया जर्मनी के सभी छात्र, उस्ताद और अन्य स्टाफ के सदस्यों के अतिरिक्त, राष्ट्रीय कार्यकारिणी जमाअत जर्मनी के सदस्य, जर्मनी में सेवा पर तैनात सभी मुबल्लिग़ और आज प्रमाण प्राप्त करने वाले सभी मुरब्बियों के माता-पिता और कुछ अन्य मेहमान शामिल थे।

प्रमाणपत्र वितरण समारोह जामिया अहमदिया जर्मनी

समारोह का आरम्भ कुरआन की तिलावत से हुआ जो प्रिय हाफिज़ एहतेशाम अहमद साहिब ने की और उसका उर्दू भाषा में अनुवाद प्रस्तुत किया। इस के बाद प्रिय मुर्तज़ा मन्नान साहिब (दर्जा खामिसह) ने हज़रत ख़लीफतुल मसीह सानी रज़ि अल्लाह तआला का कलाम

नौनेहालाने जमाअत मुझे कुछ कहना है
पर यह शर्त कि ज़ाए मेरा पैग़ाम न हो

कि चयनित शेर अच्छी आवाज़ में प्रस्तुत किया।

इसके बाद आदरणीय मुबारक अहमद तनवीर साहिब सदर शिक्षा कमेटी ने निम्नलिखित रिपोर्ट प्रस्तुत: की अल्हम्दो लिल्लाह फिर अल्हम्दो लिल्लाह, जामिया अहमदिया जर्मनी के लिए आज का दिन बहुत ही बरकत वाला है जिस में यह संस्था अपने प्यारे हुज़ूर के मुबारक हाथों लगाए गए इस उद्यान का दूसरा फल हुज़ूर अनवर की सेवा में पेश करने की सौभाग्य हासिल कर रहा है। आज इस संस्था से अपनी शिक्षा पूरी करके समाप्त होने वाली दूसरी कक्षा अपने प्यारे हुज़ूर के मुबारक हाथों से प्रमाणपत्र लेने का सौभाग्य हासिल करने वाली है। हमारे मोहसिन आक़ा ने अपनी अनगिनत व्यस्तताओं के बावजूद आज समय निकाल कर अपने ग़ुलामों को अपनी निकटता से सम्मानित किया जिस पर हम सब अपने ख़ुदा के सामने सज्दा करने वाले हैं और प्यारे आक़ा की इस करूणा पर बहुत आभारी हैं।

सय्यदी ! 2009 में जर्मनी, फ्रांस, स्विट्जरलैंड और बुल्गारिया के 23 छात्रों ने इस संस्था में अपने शैक्षिक सफर का शुभारंभ किया। अल्लाह तआला की कृपा से उनमें से 16 छात्रों ने अपनी पढ़ाई पूरी की है। और यह सब वक्फे नौ की बरकतों वाली तहरीक में शामिल हैं। अल्लाह तआला की कृपा से दो साल में 32 मुरब्बी यह संस्था अपने आक़ा की सेवा में पेश करने का सौभाग्य पा रहा है। अल्लाह तआला की दी हुई ताकत और हुज़ूर अनवर के नेतृत्व में इन सात वर्षों में निर्धारित शिक्षण पाठ्यक्रम अतिरिक्त ज्ञान और व्यायाम की प्रतियोगिताएं और विभिन्न दोस्तों के ज्ञान और सूचना व्याख्यान द्वारा इन छात्रों की बौद्धिक क्षमता को बढ़ाने की कोशिश की गई है। तुलनात्मक धर्मों के शिक्षण पाठ्यक्रम के अतिरिक्त छात्रों को विभिन्न धर्मों के केन्द्रों में भी भिजवाया जाता है ताकि छात्र सीधा उनके सिस्टम को समझ लें और जानकारी भी प्राप्त कर सकें। इस संबंध में ईसाइयों और यहूदियों के सेंटर का दौरा करवाया गया।

अल्लाह तआला की कृपा से जामिया का घरेलू प्रैस के साथ भी संपर्क है और समय समय पर टीवी, रेडियो और प्रिंट मीडिया में रिपोर्टें आती रहती हैं। इस संबंध में हाल ही में जर्मनी के प्रसिद्ध टीवी चैनल ZDF ने अपने एक कार्यक्रम के लिए तीन प्रमुख धर्मों (इस्लाम, यहूदी और ईसाई) के विद्वानों की तैयारी पर एक डाक्योमेनटरी फिल्म बनाई जिसमें हुज़ूर अनवर के इस लगाए उद्यान से भी इस्लाम के प्रतिनिधित्व में एक छात्र प्रिय सादिक अहमद बट साहिब को चुना गया। इस 45 मिनट की डोक्यूमेंटरी में लगभग तीसरा भाग जामिया अहमदिया जर्मनी छात्र के बारे में था। टीवी प्रशासन के अनुसार 19 लाख दर्शकों ने यह कार्यक्रम देखा है। फिर यही कार्यक्रम एक टीवी चैनल 3Sat एक सप्ताह के अंतराल से चलाया गया।

छात्र शिक्षा के साथ व्यावहारिक प्रशिक्षण के लिए जर्मनी के अतिरिक्त अन्य देशों में अस्थायी वक्फ भी करते रहे जिन में कबाबीर, स्वीडन, यूके आदि शामिल हैं। तथा जर्मनी के Tagder Offnen Tur के अवसर पर तब्लीग़ विभाग के

अधीन पूरे जर्मनी की विभिन्न जमाअतों में ड्यूटी देते रहे।

हुज़ूर अनवर के निर्देशन के अनुसार दर्ज़ा खामिस: के छात्रों का जामिया अहमदिया यू.के की कक्षा से दो सप्ताह के लिए ज्ञान विनिमय का कार्यक्रम भी जारी है जिस से छात्रों को हुज़ूर अनवर की मुबारक निकटता मिलने के अतिरिक्त एक दूसरे से परिचय और एक माहौल को देखने, समझने और लाभ उठाने का मौका मिलता है।

अन्य विश्वविद्यालयों के छात्रों की तरह जामिया अहमदिया जर्मनी के छात्रों को भी अल्लाह तआला की कृपा से उन्हें एम.टी.ए के कार्यक्रमों में भाग लेने के साथ कुछ कार्यक्रमों में तकनीकी सहायता की तौफ़ीक़ मिलती है।

शैक्षणिक गतिविधियों के अतिरिक्त जामिया का इस शहर के प्रशासन से भी बहुत अच्छा संपर्क है। शहर प्रशासन को जब भी ज़रूरत पड़े तो जामिया के छात्र तथा उस्ताद यदा संभव सहयोग करते हैं। प्रवासियों के आगमन पर प्रशासन जहां एक ओर व्याख्या की ज़रूरत को पूरा किया तो साथ ही प्रवासियों की मदद के लिए जामिया ने अन्य वस्तुओं के अतिरिक्त दो हज़ार यूरो नकद अदा किए। शहर में सफाई अभियान हो या ब्लड डोनेशन कैम्पस, अल्लाह तआला की कृपा से जामिया के छात्रों सबसे आगे होते हैं। पिछले साल जामिया के अंदर भी रक्त दान शिविर आयोजित किया गया था जिसमें जामिया के 59 छात्रों ने रक्तदा न दिया और एक छात्र प्रिय अकील अहमद साहिब लगातार दस बार रक्त देने पर शहर प्रशासन ने पुरस्कार से भी सम्मानित किया। इस साल विभिन्न शैक्षिक संस्थानों से 174 छात्र तथा उस्ताद जामिया देखने के लिए आए। इस साल विभिन्न समयों में कुल 441 ग़ैर मुस्लिम और ग़ैर अहमदी दोस्त जामिया में आए जिनमें जर्मन, अरब और अन्य देशों के लोग शामिल थे और इसी तरह विभिन्न जमाअतों के प्रतिनिधिमंडल 180 लोग जामिया देखने के लिए आए जिनमें एक बड़ी संख्या वाकफीन नौ की थी। दर्जा शाहिद के छात्रों ने अपने शैक्षिक सफर जारी रखते हुए सातवें वर्ष हुज़ूर अनवर द्वारा पारित किए गए शीर्षकों पर थीसिस लिखे। हुज़ूर अनवर क स्वीकृति से उन्हें अलग परीक्षक को चेकिंग के लिए भिजवाया गया। चेकिंग के बाद मकालों क इन्ट्रविय़ू हुए। उनके इन्ट्रविय़ू में जर्मनी के अतिरिक्त फ्रांस, यू.के और स्विट्जरलैंड के परीक्षक भी शामिल थे।

2016 ई में दर्जा शाहिद की परीक्षाओं के लिए हुज़ूर अनवर के इरशाद के अनुसार कुछ परीक्षण पर्चे जामिया अहमदिया यू.के और जर्मनी से संबंधित विभिन्न विद्वानों ने तैयार किए और उन्होंने ही चेक किए।

मई 2016 में हुज़ूर अनवर द्वारा निर्धारित 5 सदस्यीय बोर्ड ने छात्रों का अंतिम इन्ट्रविय़ू लिया। इन सभी परीक्षाओं के रिज़ल्ट साथ साथ हुज़ूर अनवर की सेवा में स्वीकृति के लिए पेश किए जाते रहे।

हुज़ूर अनवर की दुआओं और केवल अल्लाह तआला की कृपा और दया के साथ इन सभी छात्रों ने परीक्षा, निबंध श्रेणियाँ और इंटरव्यू में सफलता हासिल की। अल्हम्दो लिल्लाह अला ज़ालेक।

अन्य खेलों के अतिरिक्त छात्रों को हाईकनग का मौका भी मिला। दर्जा शाहिद परीक्षाओं के बाद इस वर्ग के छात्रों को पढ़ाने के साथ कुछ व्यावहारिक प्रशिक्षण भी करवाया जाती है जो खाना बनाना, बिजली का काम, होम्योपैथी से परिचय और वाहन के कुछ बुनियादी कार्योंसे परिचय है।

प्यारे आक़ा! जामिया का शिक्षण और जामिया के उस्तादों व प्रशासन का प्रयास अपनी जगह लेकिन तथ्य यही है जिसे हज़रत मौलाना अब्दुल करीम सियालकोटी रज़ि अल्लाह ने फरमाया: " मैंने कुरआन भी पढ़ा था। मौलाना नूर दीन के तुफ़ैल हदीस का शौक भी हो गया था। घर म सूफियों की किताबें भी पढ़ लिया करता था। लेकिन ईमान में वह नूर और नूर की अनुभूति में तरक्की न थी जो अब है। इसलिए मैं अपने दोस्तों को अपने अनुभव के आधार पर कहता हूं कि याद रखें इस ख़लीफतुल्लाह को देखे बिना सहाबा जैसा जीवित ईमान नहीं मिल सकता।"

(तारीख़े अहमदियत, जिल्द1 पृष्ठ, 342)

हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ि अल्लाह इस तथ्य की ओर जमाअत के दोस्तों का ध्यान आकर्षित करवाते हुए कहते हैं: " एक आध्यात्मिक प्रभाव होता है जो सामने आने वाले लोगों पर पड़ता है। इसे प्रत्येक नहीं समझ सकता.... दुआ के अतिरिक्त दिल का एक प्रभाव है और इसके माध्यम से बहुत से सुधार हो जाते हैं और इस प्रभाव को वही प्राप्त कर सकता है जो मज्लिस में आकर बैठे और जो मज्लिस में नहीं आता इस पर यह प्रभाव नहीं हो सकता। "

(ख़िताब जलसा सालाना 27 दिसंबर 1920, उद्धरण दैनिक अलफज़ल 21 मार्च 2011,पृष्ठ 11)

हुज़ूर अनवर से मुलाकात, संबंध और निकटता न हो तो केवल पाठ्य पुस्तकों के शब्द तो अपनी ज़ात में ईमान का नूर पैदा नहीं कर सकतीं। इसीलिए इन सात वर्षों में प्यारे आक़ा के जर्मनी आगमन के अवसर पर की कोशिश की जाती रही कि हुज़ूर अनवर की निकटता के जो पल भी उपलब्ध हो सकें उनसे लाभ उठाया जाए। हुज़ूर अनवर की दया से छात्रों को जब भी मौका मिला, प्यारे आक़ा के साथ कक्षाओं में शामिल होने का सौभाग्य प्राप्त होता रहा। इसी तरह जामिया अहमदिया के प्रशासन द्वारा हर संभव कोशिश की गई कि छात्रों को अधिकतम हुज़ूर अनवर की सेवा में लंदन मुलाक़ात के लिए जाएं और हुज़ूर अनवर से सीधे लाभान्वित करें। अल्हम्दो लिल्लाह केवल कुछ एक छात्र जिन्हें वीज़ा की समस्या है सब ही प्यारा आक़ा से मिलने का सौभाग्य हासिल कर चुके हैं।

आज हम एक ओर अल्लाह तआला का शुक्र अदा करते हैं कि यह छात्रों अपने 7 साल के शैक्षिक सफर का एक चरण खूबी से पूरा करके कार्य क्षेत्र में जाने के लिए हुज़ूर अनवर की सेवा में पेश हैं तो दूसरी तरफ अपनी सभी कोशिशों के बावजूद हम जामिया अहमदिया जर्मनी के सभी उस्तादों और छात्रों को अपनी कमज़ोरियों और कमियों को स्वीकार करते हुए अपने प्यारे आक़ा की सेवा में दुआ का आवेदन करते हैं कि अल्लाह तआला हमारी कमज़ोरियों को छिपाए और ख़ुदा और ख़ुदा का प्यारा इमाम हम से जो सेवा की उम्मीद रखते हैं और जिस स्थान पर हमें देखना चाहते हैं सामर्थवान ख़ुदा केवल अपनी कृपा से हमें वैसा ही बना दे। आमीन अल्लाह हुम्मा आमीन।

अंत में हुज़ूर अनवर सेवा में विनम्र अनुरोध है कि जामिया अहमदिया जर्मनी से स्नातकों होने वाले मुरब्बी सिलसिले को कुरआन के अनुवाद और शाहिद की डिग्री दें। तथा शेष कक्षाओं में अव्वल द्वितीय और तृतीय स्थान प्राप्त करने वाले छात्रों को भी पुरस्कार दें।

इस के बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने जामिया की छह कक्षाओं की वार्षिक परीक्षाओं में अव्वल, द्वितीय और तृतीय स्थान प्राप्त करने वाले छात्रों को पुरस्कार से दिए। इसके बाद जामिया अहमदिया जर्मनी से स्नातक होने वाली दूसरी कक्षा निम्नलिखित मुरब्बियों को तफसीर सग़ीर और दर्जा शाहिद की उपाधि प्रदान की।

आदरणीय शेख अब्दुलहन्नान साहिब मुबल्लिग़ सिलसिला , मंसूर अहमद घुंमन साहिब मुबल्लिग़ सिलसिला , अरसलान अहमद संधू साहिब मुबल्लिग़ सिलसिला , अज़ीज़ अहमद घुंमन साहिब मुबल्लिग़ सिलसिला , आफताब असलम साहिब मुबल्लिग़ सिलसिला , मुहम्मद मुसव्विर अहमद गोनदल साहिब मुबल्लिग़ सिलसिला , जवाद अहमद जट साहिब मुबल्लिग़ सिलसिला , मुहम्मद सरफराज ख़ान मुबल्लिग़ सिलसिला, फख़र अहमद आफताब साहिब मुबल्लिग़ सिलसिला , राणा मुहम्मद मुनव्वर साहिब मुबल्लिग़ सिलसिला , अदील अहमद खालिद साहिब मुबल्लिग़ सिलसिला , जवादुद्दीन अफ्फान साहिब मुबल्लिग़ सिलसिला , अहमद बहज़ाद चौधरी साहिब मुबल्लिग़ सिलसिला , वफ़ा मुहम्मद साहिब मुबल्लिग़ सिलसिला, हबीबुर्रहमान नासिर साहिब मुबल्लिग़ सिलसिला , ओसामा अहमद साहिब मुबल्लिग़ सिलसिला , अब्दुल्लाह साहिब (बुल्गारिया) मुबल्लिग़ सिलसिला

इसके बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने स्नातक छात्रों मुरब्बियों को संबोधित फ़रमाया।

ख़िताब

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने तशह्हुद, तऊज़, तसमिया और सूर: फातिहा की तिलावत के बाद फरमाया: जामिया प्रशासन के द्वारा जो एक विस्तृत रिपोर्ट पेश की गई है इस में विभिन्न activites का भी उल्लेख किया गया। जामिया के शैक्षिक पाठ्यक्रम के अतिरिक्त जो ये बातें हैं, उनका परिचय इसलिए करवाया जाता है या उन चीजों में शामिल होने के लिए कहा जाता है ताकि मुरब्बी जब कार्य क्षेत्र में आएं तो उन्हें जहां इन बातों का ज्ञान हो वहाँ उन पर इन बातों का महत्त्व भी स्पष्ट हो और वह इस बारे में प्रयास करने वाले भी हों।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने फरमाया: कार्य क्षेत्र में आकर आप लोगों की जिम्मेदारियां बढ़ जाती हैं। यद्यपि एक छात्र जो जामिया में आता है उससे यही उम्मीद की जाती है कि उसकी धार्मिक गुणवत्ता, उसका नैतिक मानकों, उसका रहन-सहन, उस का बातचीत के तरीके, बाकी दूसरों से अलग हो और इसमें धीरे धीरे विकास और बेहतरी पैदा होती रहे। लेकिन कार्य क्षेत्र में आकर आप के कंधों पर बड़ी ज़िम्मेदारी आ पड़ी है। अब आप

केवल छात्र नहीं रहे वैसे छात्र तो मनुष्य हमेशा रहता है। आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने यही फरमाया है कि कब्र तक ज्ञान प्राप्त करना चाहिए। बल्कि उसके साथ आप की ज़िम्मेदारी यह भी है कि जहां अपनों का प्रशिक्षण करना है वहा ग़ैरों लोगों को इस्लाम का सुन्दर संदेश भी पहुंचाना है और यह एक बहुत बड़ी ज़िम्मेदारी है।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने फरमाया: अभी जो आयत पढ़ी गई है उसमें भी हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ि अलाह ने यही कहा है कि एक लक्ष्य प्राप्त करना है कि बहुत बड़ी ज़िम्मेदारी है। तो तुम में हमेशा इस ज़िम्मेदारी का एहसास न केवल पैदा होना चाहिए बल्कि बढ़ते रहना चाहिए। अब दुनिया की नज़र आप पर है। चाहे वह अहमदी हैं या ग़ैर अहमदी हैं या ग़ैर मुस्लिम हैं। आप लोगों के दिलों से अब सभी प्रकार के सांसारिक भय दूर हो जाने चाहिए और इस सांसारिक डर को दिल से दूर करके अल्लाह तआला से संबंध में हर पल आप को बढ़ते रहने की कोशिश करनी चाहिए। अल्लाह तआला से संबंध ही है जो हर अवसर पर आप के काम आएगा। अगर ख़ुदा तआला से संबंध की वह गुणवत्ता नहीं जो एक मुरब्बी और उपदेशक में होनी चाहिए, जिसने यह प्रतिज्ञा की है कि मैं धर्म के संदेश को दुनिया में फैलाने के लिए अपना जीवन समर्पित करता हूँ, न केवल अपनी स्थिति में परिवर्तन बनाने वाला हूं और इस बदलाव में बढ़ता चला जाऊँगा बल्कि दुनिया का सुधार करके उन्हें भी ख़ुदा तआला के करीब लाऊंगा। तो यह बात हमेशा याद रखें कि यह काम नहीं हो सकता जब तक कि ख़ुदा तआला से संबंध पैदा न हो और संबंध बनाने के लिए आप अपने नफलों और दुआ में न केवल यह कि सुस्ती नहीं दिखानी बल्कि बहुत कानिशश होकर इस तरह ध्यान देना है। कोशिश करके उसे प्राप्त करना है।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने फरमाया: मैंने देखा है कि प्राय मुरब्बियों से जब भी सवाल करता हूँ तो नफलों में बहुत सुस्ती है। तहज्जुद के लिए उठने में बड़ी सस्ती है। यहाँ विशेष रूप से यूरोप में गर्मी के दिनों में जब रातें छोटी हो जाती और दिन लंबे हो जाते हैं, बहुत थोड़ा सोने का समय मिलता है। लेकिन इसमें भी आप लोगों को कोशिश करनी चाहिए कि नफल पढ़ने के लिए जागें और नफिल अदा करें और यही बातें या नफल ही हैं जो अल्लाह तआला से संबंध बनाने और संबंध बढ़ाने में महत्वपूर्ण भूमिका अदा करते हैं। फर्ज़ तो हर अहमदी और हर मुसलमान के लिए फर्ज़ हैं और अहमदी मुसलमान के लिए विशेष रूप से जिस ने हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम को माना और उसने यह वादा किया कि मैं धर्म को दुनिया में प्राथमिकता रखूँगा। लेकिन एक मुरब्बी का वादा इससे बढ़कर है। अत: हमेशा याद रखें कि आप लोगों की नफल पढ़ने की तरफ ध्यान होना चाहिए और कुछ कार्य क्षेत्र में आने के बावजूद सुबह की नमाज़ में सुस्ती दिखाते हैं। यह सुस्तियाँ अब दूर होनी चाहिए। यह सुस्तियाँ दूर करेंगे तो अल्लाह तआला से संबंध में भी तरक्की होगी।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने फरमाया: आप सभी का बड़ा तौहीद की स्थापना है। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम इस ज़माने में इसी उद्देश्य के लिए आए हैं कि तौहीद की स्थापना हो और बन्दा का ख़ुदा तआला से संबंध पैदा हो। यह एक बहुत बड़ा लक्ष्य है और दूसरा उद्देश्य मनुष्य का आपस में अधिकार हैं उनकी ओर ध्यान दें। अगर ख़ुदा तआला का भय दिल में हो है। यदि ख़ुदा तआला से संबंध हो तो तभी आप तौहीद की स्थापना के लिए वास्तविक प्रयास कर सकते हैं। तभी आप को वह एहसास मिल सकता है कि तौहीद क्या बात है अन्यथा यदि इबादतें नहीं और इबादतों के मुकाबला में कुछ सुस्तियाँ आड़े आ रही हैं तो इसका मतलब यह है कि आप तौहीद के मुकाबला में किसी और बात को खड़ा कर दिया है। यह प्राय मैं जमाअत के लोगों को भी कहता रहता हूँ लेकिन मुरब्बियों लिए यह सबसे महत्त्वपूर्ण बात है। अगर अल्लाह तआला संबंध पैदा करेंगे तो तब ही तुम तौहीद की स्थापना के लिए भरपूर कोशिश कर सकते हो। इबादत के बिना यह असंभव है कि आप तौहीद की स्थापना कर सकें।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने फरमाया: फिर इबादतों और नमाज़ों की ओर ध्यान देने के बाद कुरआन पढ़ना, उस पर विचार करना उसकी तफ़सीरों को पढ़ना, यह एक बहुत बड़ा काम है। आप यहाँ जामिया अहमदिया में तफसीर पढ़ाई गई और तफसीर का संक्षिप्त परिचय करवाया गया होगा या कुछ सीमा तक टीका पढ़ाई गई गई लेकिन अब इसमें अधिक विस्तार करने के लिए अपने ज्ञान को आगे बढ़ाने के लिए, आप को ख़ुद जहां कुरआन पर विचार करने की ज़रूरत है वहाँ जो विभिन्न तफ़सीरों हैं उन को भी पढ़ें। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने अपनी पुस्तकों में विभिन्न आयतों की व्याख्या की है वह कमेंटरी के रूप में एक जगह इकट्ठा है। उस को लगातार अपने अध्ययन में रखना चाहिए। इस तरह हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ि अल्लाह की तलगभग 54 सुरतों की तफ़सीर हैं, उन्हें पढ़ना चाहिए और हमेशा अपने अध्ययन को बढ़ाते चले जाएं। यही बातें अपने के धर्म में काम आएंगी। हर अवसर पर यह कोशिश करें कि आप को आप के उत्तर कुरआन से मिलें और वह तभी मिल सकता है जब आप इस पर विचार करने और चिन्तन की आदत होगी।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने फरमाया: मैंने हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की व्याख्या का संक्षिप्त उल्लेख कर दिया जो चार संस्करणों में कमेंटरी के रूप में जमाअत के साहित्य में मौजूद हैं। इसके अतिरिक्त आप अलैहिस्सलाम की पुस्तकों का अध्ययन भी बहुत आवश्यक है। आप को न्यूनतम आधा घंटा दैनिक, इससे अधिक हो तो और भी अच्छा है, हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम किसी न किसी किताब का अध्ययन करते रहना चाहिए। और यह बात अपने ज्ञान को बढ़ाने में एक महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाएगी। अन्यथा दुनियावी ज्ञान जो आप ने विभिन्न स्थानों से सीखा या पढ़ कर आए हैं या आगे भी शायद आप को पढ़ने का मौका मिले इस से कोई लाभ नहीं। आप लोगों को तहरीक करते हैं कि इस ज़माने में हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की पुस्तकें पढ़ो लेकिन जब तक ख़ुद नहीं पढ़ रहे होंगे आप के तहरीक और ध्यान दिलाने में बरकत नहीं पड़ेगी। अत: तदनुसार हमेशा याद रखें कि यह अध्ययन महत्वपूर्ण है।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने फरमाया: फिर एक महत्त्वपूर्ण बात यह है कि आप लोग कार्य क्षेत्र में समय के ख़लीफा के प्रतिनिधि हैं और आप इस प्रतिनिधित्व का हक अदा करना है जिस में प्रशिक्षण भी शामिल है और तब्लीग़ भी शामिल है। किसी भी प्रकार की मदाहनत की ज़रूरत नहीं है। यहाँ आप ने सामने शेर लिखकर लगाए हुए हैं कि:

महमूद करके छोड़गें हम हक को आशकार
रूए ज़मीं को चाहे हिलाना पड़े हमें

कई बार मैंने देखा है कि धरती को क्या हिलाना है कुछ लोग ज़रा प्रैस का दबाव या समाज का दबाव या उन देशों के ग़लत नियम जो उन्होंने स्वतंत्रता के नाम पर बना दिए हैं उनके प्रभाव में आकर हिक्मत के स्थान पर मदाहनत से काम लेना शुरू कर देते हैं। धरती को तो हम तभी हिला सकते हैं जब हमारा अपना ईमान मज़बूत हो और मज़बूत ईमान के साथ हम दुनिया का मुकाबला करने वाले हों। अगर कुरआन कहता है कि समलैंगिकता एक बुराई है तो उसका मुकाबला हम को करना है। चाहे जितने भी सांसारिक कानून पास होते

इस्लाम और जमाअत अहमदिया के बारे में किसी भी प्रकार की जानकारी के लिए संपर्क करें

नूरुल इस्लाम नं. (टोल फ्री सेवा) :
1800 3010 2131
(शुक्रवार को छोड़ कर सभी दिन सुबह 9:00 बजे से रात 11:00 बजे तक)
Web. www.alislam.org, www.ahmadiyyamuslimjamaat.in

दुआ का अभिलाषी
जी.एम. मुहम्मद शरीफ़
जमाअत अहमदिया मरकरा (कर्नाटक)

EDITOR
SHAIKH MUJAHID AHMAD
Editor : +91-9915379255
e-mail : badarqadian@gmail.com
www.alislam.org/badr

REGISTERED WITH THE REGISTRAR OF THE NEWSPAPERS FOR INDIA AT NO RN PUNHIN/2016/70553
The Weekly BADAR Qadian
Qadian - 143516 Distt. Gurdaspur (Pb.) INDIA
POSTAL REG. No.GDP 2017-2019/45- Vol. 2 Thursday 28 September 2017 Issue No. 39

MANAGER :
NAWAB AHMAD
Tel. : +91- 1872-224757
Mobile : +91-94170-20616
e-mail:managerbadrqnd@gmail.com

ANNUAL SUBSCRIBTION: Rs. 300/- Per Issue: Rs. 6/- WEIGHT- 20-50 gms/ issue

रहें। अगर इस्लाम कहता है कि महिलाओं और पुरुषों में एक अन्तर भी है और फर्क भी है और जुदाई होनी चाहिए और हाथ मिलाने से बचना चाहिए तो इसमें आप को साहस से काम लेना चाहिए। इसी तरह कुछ अन्य अधिकार हैं। अगर स्वतंत्रता के नाम पर ये लोग बिगड़ रहे हैं उन्हें बिगड़ने से बचाने के लिए आप को योगदान करना है न कि युक्ति के नाम पर मदाहनत दिखाना शुरू कर दें। अल्लाह तआला पर भरोसा और मदाहनत में बड़ा अंतर है। युक्ति यह है कि एक चीज़ का आप हिक्मत से वर्णन करें लेकिन कमजोरी न दिखाएँ। यह न हो कि आप कहने वाले हों कि अगर किसी से मुकाबला हो जाता है कि अच्छा ठीक है हम मान लेते हैं या उसकी ऐसी व्याख्याएं प्रस्तुत करें जो इस्लामी शिक्षा के ख़िलाफ हों। यह हमारा उद्देश्य नहीं। हाँ अगर लड़ाई होने का अंदेशा हो तो वहाँ से उठकर चले जाएं। बहरहाल हम ने लड़ाई नहीं करनी लेकिन हमारा जो स्टैंड है, जो हमारी प्राथमिक शिक्षा है जो हमें अल्लाह तआला और उसके रसूल ने आदेश दिए हुए हैं उनसे हम ने बहरहाल पीछे नहीं हटना।चाहे एक ख़बर क्या अख़बारों के अख़बार आप के ख़िलाफ कॉलम लिखना शुरू कर दें तब भी आप ने अपने रुख पर कायम रहना है। और उसकी कोई परवाह नहीं करनी नहीं। इसकी चिंता की ज़रूरत है कि अगर हम ने उन लोगों की बातें न मानीं तो हम शायद जमाअत अहमदिया का संदेश या इस्लाम का संदेश न पहुंचा सकें। इस्लाम का संदेश तो बहरहाल पहुँचना है। यह अल्लाह तआला का वादा है। अल्लाह तआला ने हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम को इल्हाम करके फरमाया था कि " मैं तेरी तब्लीग़ पृथ्वी के किनारों तक पहुँचाऊंगा" जब अल्लाह तआला ने यह वादा किया हुआ है तो हमें क्या ज़रूरत है और फिर अल्लाह तआला ने कुरआन में भी कहा है "मैं और मेरे रसूल विजयी आएंगे" जब ये वादे ही इतने अधिक हैं तो हमें किसी भी प्रकार के भय की ज़रूरत नहीं है कि शायद हमारा संदेश न पहुँचे। या हिक्मत नहीं यह कायरता है और एक मुबल्लिग़ से एक मुरब्बी से बल्कि उहदेदारों से भी ऐसी कायरता प्रकट नहीं होनी चाहिए। तभी आप समय के ख़लीफा का प्रतिनिधित्व का सही हक़ अदा कर सकते हैं।

(शेष.....)

☆ ☆ ☆

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की सच्चाई का एक महान सबूत

وَلَوْ تَقَوَّلَ عَلَيْنَا بَعْضَ الْاَقَاوِيْلِ لَاَخَذْنَا مِنْهُ بِالْيَمِيْنِ ثُمَّ لَقَطَعْنَا مِنْهُ الْوَتِيْنَ
(अल्हाक्का 45-47)

और अगर वह कुछ बातें झूठे तौर से हमारी ओर सम्बद्ध कर देता तो ज़रूर हम उसे दाहने हाथ से पकड़ लेते। फिर हम नि:संदेह उसकी जान की शिरा काट देते।

सय्यदना हज़रत अकदस मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद साहिब क़ादियानी मसीह मौऊद व महदी मअहूद अलैहिस्सलाम संस्थापक अहमदिया मुस्लिम जमाअत ने इस्लाम की सच्चाई और आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के साथ रूहानी सम्बंध पर कई बार ख़ुदा तआला की क़सम खा कर बताया कि मैं ख़ुदा की तरफ से हूं। ऐसे अधिकतर उपदेशों को एक स्थान पर जमा कर के एक पुस्तक

ख़ुदा की क़सम

के नाम से प्रकाशित की गई है। किताब प्राप्त करने के इच्छुक दोस्त पोस्ट कार्ड/मेल भेजकर मुफ्त किताब प्राप्त करें।

E-Mail : **ansarullahbharat@gmail.com**
Ph : 01872-220186, Fax : 01872-224186
Postal-Address:Aiwan-e-Ansar,Mohalla Ahmadiyya,Qadian-143516,Punjab
For On-line Visit :www.alislam.org/urdu/library/57.html

पृष्ठ 1 का शेष

बड़ी ख़ुशी से कह देते हो कि आप ने वफात पाई। आप की पैदायश का वर्ण करने वाले बड़ी ख़ुशी से वफात की घटनाओं का वर्णन करते हैं। और कुफ्फार के मुकबला में भी तुम बड़ी ख़ुशी से स्वीकार कर लेते हो कि आप ने वफात पाई। फिर मैं नहीं समझता कि हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम की वफात के बारे में क्या पत्थर पड़ता है कि नीली पीली आंखें करते हैं हमें भी दु:ख न होता कि अगर तुम आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के बारे में भी मृत्यु का शब्द सुन कर ऐसे आंसू बहाते। मगर अफसोस तो यह है कि ख़ातमन्नबिय्यीन और सरवरे आलम के बारे में तो तुम बड़ी ख़ुशी से मौत स्वीकार कर लो और उस व्यक्ति की तुलना में जो अपने आप को आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की जूती का तस्मा खोलने के भी लायक नहीं बताता जीवित विश्वास करते हो और उस के बारे में मौत का शब्द मुंह से निकला और तुम नाराज़ हो। यदि आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम इस समय तक जीवित रहते, तो कोई हर्ज न था। क्योंकि आप एक महान मार्गदर्शन के साथ आए, जिसका नमूना दुनिया में नहीं मिला है। और आप ने वह व्यावहारिक परिस्थितियां दिखाई हैं कि अब तक आदम से लेकर इस समय तक कोई उन का नमूना और उदाहरण पेश नहीं कर सकता। मैं तुम्हें सच सच बताता हूँ कि आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के अस्तित्व की ज़रूरत दुनिया और मुसलमानों को थी इतनी ज़रूरत मसीह के अस्तित्व की नहीं थी। फिर आप का मुबारक अस्तित्व वह मुबारक अस्तित्व है कि जब आप ने मृत्यु पाई तो सहाबा की यह हालत थी कि वह दीवाने हो गए। यहां तक कि उमर रज़ि अल्लाह ने तलवार हाथ में निकाल ली और कहा कि यदि कोई आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को वफात पाया हुआ कहेगा तो मैं उस का सिर अलग कर दूंगा। इस स्थिति में, अल्लाह तआला ने हज़रत अबू बकर को एक विशेष ज्ञान प्रदान किया। उन्होंने सभी को इकट्ठा किया और ख़ुत्बा पढ़ा। وَمَا مُحَمَّدٌ اِلَّا رَسُوْلٌ قَدْ خَلَتْ مِنْ قَبْلِهِ الرُّسُلُ अर्थात आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम एक रसूल हैं और आप से पूर्ववर्ती जितने रसूल आए हैं वे वफात पा चुके हैं। अब आप विचार करें और सोच कर बताएं कि हज़रत अबू बक्र सिद्दीकी ने आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की मृत्यु पर इस आयत को क्यों पढ़ा था। और आप का मतलब क्या था? और फिर ऐसा अवस्था में कि सारे सहाबी मौजूद थे। मैं निश्चित रूप से कहता हूं, और आप इस बात से इनकार नहीं कर सकते कि आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की मृत्यु के कारण से सहाबा के दिल पर बहुत सख्त सदमा था और इसे समय से पूर्व की बात समझते था। वे पसंद नहीं कर सके कि आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की मृत्यु की ख़बर सुनें ऐसी हालत और अवस्था में कि हज़रत उमर जैसा महान सहाबी इस जोश की स्थिति में हो उनका ग़ुस्सा दूर नहीं हो सकता सिवाय इसके कि यह आयत उनकी संतुष्टि का कारण होती अगर उन्हें यह पता होता या विश्वास होता कि हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम जीवित हैं तो वे तो जीवित ही मर जाते। वे तो आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के आशिक थे, और आप के जीवन को छोड़कर किसी भी अन्य जीवन को बर्दाशत ही नहीं कर सकते थे। फिर कैसे अपनी आंखों के सामने आप को मृत देखते और मसीह को जीवित विश्वास करते। अर्थात जब हज़रत अबू बक्र ने ख़ुत्बा पढ़ा, तो उन का जोश था दूर हो गया। उस समय सहाबा मदीना की गलियों में यह आयत पढ़ते फिरते थे, और उनका मानना था कि यह आयत आज अवतरित हुई है। उस समय, हस्सान बिन साबित ने एक मरसिया लिखा था जिसमें उन्होंने कहा

كُنْتَ السَّوَادَ لِنَاظِرِيْ فَعَمِيَ عَلَيْكَ النَّاظِرُ
مَنْ شَاءَ بَعْدَكَ فَلْيَمُتْ فَعَلَيْكَ كُنْتُ اُحَاذِرُ

(लेकचर लाहौर, रूहानी ख़ज़ायन, जिल्द 20,पृष्ठ 258 -262,)

☆ ☆ ☆

Printed & Published by: Jameel Ahmed Nasir on behalf of Nigran Board of Badar. Name of Owner: Nigran Board of Badar. And printed at Fazle-Umar Printing Press. Harchowal Road, Qadian, Distt. Gurdaspur-143516, Punjab. And published at office of the Weekly Badar Mohallah - Ahmadiyya, Qadian Distt. Gsp-143516, Punjab. India. Editor:Shaikh Mujahid Ahmad